डॉक्टर ने ऑपरेशन में 25 हज़ार का खर्चा बताया है। ऑपरेशन तुरंत नहीं हुआ तो उनका बचना मुश्किल है। किसी तरह से 5 हज़ार का जुगाड़ हो पाया है। कई जगह गया, लेकिन और पैसों का इंतज़ाम नहीं हो पाया। पता नहीं, क्या होगा!"

बरकत मियाँ ने उसे धीरज बँधाया। उसे अपने साथ घर ले आए। हज के लिए इकट्ठे किए गए 20 हज़ार रुपये उसके हाथ पर रख दिए। सेवाराम ने कहा– "लेकिन चचा, आपके हज का क्या होगा?"

बरकत मियाँ ने कहा– "तुम उसकी चिंता छोड़ो। हज के लिए फिर से पैसे जोड़ लेंगे। अभी तो माँ का इलाज कराना ज़रूरी है।"

सेवाराम कुछ नहीं बोला। उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े।

(i) बरकत मियाँ क्यों खुश थे?

....

(ii) बरकत मियाँ ने हज के लिए रकम कैसे इकट्ठी की?

....

(iii) सेवाराम क्यों परेशान था?

....

(iv) बरकत मियाँ ने क्या किया?

....

10.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ख) जेल से
2. (ग) लगान न चुका पाना
3. (घ) जेल से भागने के

पाठगत प्रश्न-10.1

1. (घ) जज़
2. (घ) श्रद्धा

पाठगत प्रश्न-10.2

1. (घ) बूढ़े की हालत के प्रति चिंता के कारण
2. (ख) वह बूढ़े की सहायता करना चाहता था।

पाठगत प्रश्न-10.3

1. (क) निस्वार्थ भाव
2. (ग) सुधरने का मौका देकर

❀ ❀ ❀

11

संत कबीर और रविदास के पद

संत कबीर और संत रविदास की वाणी जनता में बहुत प्रसिद्ध है। आपने भी इनकी साखियाँ और पद पढ़े-सुने होंगे। ये केवल भक्त ही नहीं थे, सच्चे समाज-सुधारक भी थे। दोनों ही संतों ने अपने काव्य के जरिए समाज को सच्ची राह दिखाई। छुआछूत, ऊँच-नीच और ढोंग-आडंबर का विरोध किया। आइए, इन भक्त कवियों का एक-एक पद पढ़ें और समझें।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप :

- ईश्वर के स्वरूप और उसकी प्राप्ति के मार्ग का वर्णन कर सकेंगे;
- भक्ति के नाम पर दिखावे और कर्मकांड की व्यर्थता का उल्लेख कर सकेंगे;
- भगवान और भक्त के बीच घनिष्ठ संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विलोम शब्दों को पहचान कर उनका प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

हमारे देश में कई भक्त कवि हुए हैं, जिनकी रचनाएँ आज भी आम लोगों की जुबान पर हैं। ऐसे चार भक्त कवियों के नाम लिखिए :

....

....

11.1 मूल पाठ

(1)

संत कबीर का पद

मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल, ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग-बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।

(2)

संत रविदास का पद

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग-अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन-राती।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहि मिलत सोहागा।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

शब्दार्थ

मोको	–	मुझे	योग-वैराग	–	योग-साधना और संयास
बंदे	–	मनुष्य	तालास	–	तलाश
देवल	–	मंदिर	जाकी	–	जिसकी
काबा	–	मुसलमानों का तीर्थ-स्थान	बास	–	गंध
कैलास	–	हिंदुओं का तीर्थ-स्थान कैलाश पर्वत	चितवत	–	एकटक देखना
			घन	–	बादल
बैराग	–	संन्यास	चंद	–	चंद्रमा
खोजी	–	खोज करने या ढूँढ़ने वाला	जोति	–	दीपक की लौ
क्रिया-कर्म	–	कर्मकांड, दिखावा	बरै	–	जलती है

11.2 बोध-प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों को एक रेखा से मिलाकर उपयुक्त जोड़े बनाइए :

चंदन	बाती
चंद	दास
दीपक	धागा
मोती	पानी
सोना	चकोर
स्वामी	सुहागा

11.3 आइए, समझें

11.3.1 अंश–1

मोको कहाँ .... स्वाँस में।

कबीरदास ने इस पद में ईश्वर के सर्वव्यापी होने की बात कही है। ईश्वर को पाने के लिए लोग न जाने कहाँ-कहाँ भटकते हैं, लंबी-लंबी यात्राएँ करते हैं, तब भी वे ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाते। कबीर के अनुसार ईश्वर को पाने के लिए, उसे जानने और पहचानने की ज़रूरत है। वह तो हर जगह, कण-कण में विद्‌यमान है। इसी बात को कबीर ने मानो ईश्वर की ओर से कहलवाया है।

ईश्वर कहता है कि हे मनुष्य! तू मुझे कहाँ ढूँढ़ रहा है? मैं तो तेरे अंदर ही हूँ। न मैं मंदिर में हूँ, न मस्ज़िद में; न काबा में, न कैलाश में। तू मुझे पाने के लिए तरह-तरह के क्रियाकलाप करता है। कभी पूजा, कभी हवन, कभी नमाज, कभी प्रार्थना, कभी योग, तो कभी संसार त्याग कर वैराग का सहारा लेता है; परंतु मैं इन सब कामों से मिलने वाला नहीं हूँ। मैं तो सभी जगह हूँ। मुझे पाने के लिए कुछ करने या कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। अगर तू सच्चा खोजी बनेगा अर्थात् ज्ञान की साधना करेगा तो पलभर की खोज में ही तुझे मिल जाऊँगा; क्योंकि मैं तेरी हर साँस में बसा हूँ।

पाठगत प्रश्न-11.1

1. सर्वाधिक उपयुक्त शब्द द्‌वारा वाक्य पूरा कीजिए :

(i) .... सर्वव्यापी है। (योग/ईश्वर/मनुष्य)

(ii) ईश्वर को सच्चे हृदय से .... करने की ज़रूरत है। (पूजा/सेवा/महसूस)

(iii) लोग मंदिर, मस्ज़िद, काबा, कैलाश .... की प्राप्ति के लिए जाते हैं। (ईश्वर/सुरक्षा/मृत्यु)

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

कबीरदास ने सर्वाधिक महत्त्व दिया है –

(क) खोजी को	☐	(ख) योग को	☐
(ग) वैराग्य को	☐	(घ) क्रिया कर्म को	☐

11.3.2 अंश–2

प्रभु जी .... करै रैदासा।।

इस पद को एक बार पूरा फिर से पढ़ लें।

इस पद में संत रविदास ने ईश्वर और सच्चे भक्तों के अटूट संबंध को व्यक्त किया है। वे कहते हैं कि हे प्रभु! तुम चंदन की तरह हो, हम पानी की तरह। चंदन को पानी के साथ घिसने पर पानी का अस्तित्त्व समाप्त हो जाता है। उसके बाद केवल चंदन की सुगंध हर ओर फैलती है। हमारा और तुम्हारा रिश्ता बादल और मोर की तरह है। मोर जिस प्रकार बादलों को देखकर प्रसन्न हो जाता है ठीक उसी प्रकार भक्त भी आपके दर्शन से आनंदित हो जाता है। तुम चंद्रमा की तरह हो, हम चकोर की तरह। चकोर के लिए संसार में सबसे आकर्षक और महत्वपूर्ण चंद्रमा ही होता है और वह निरंतर उसकी ओर देखता रहता है।

हे प्रभु! तुम दीपक हो, हम बाती की तरह हैं। बाती रात-दिन जलकर जो प्रकाश देती है वह दीपक का ही प्रकाश होता है। तुम्हारा-हमारा रिश्ता मोती और धागे की तरह है। मोतियों की माला में धागा नज़र नहीं आता, केवल मोतियों की आभा बिखरती है। इसी तरह हम सोने और सोहागे की तरह हैं। सोने में सोहागा मिलाने पर सोने की दमक बढ़ जाती है। उसी प्रकार आपका साथ हमें और निखार देता है।

हे प्रभु! तुम स्वामी हो और हम दास। हमारी भक्ति ऐसी ही है। हमारा अपना कोई अस्तित्त्व नहीं। हमारा सब कुछ तुम्हें समर्पित है।

इस प्रकार संत रविदास भक्ति में पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त करते हैं। भक्ति वहीं है, जहाँ भक्त का अपना कोई अस्तित्त्व नहीं रह जाता। जहाँ मैं और अहं का भाव रहता है, वहाँ भगवान और भक्त के बीच हमेशा दूरी बनी रहती है।

पाठगत प्रश्न–11.2

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर खाली जगह पर लिखिए :

(i) बाती रात-दिन जलकर .... फैलाती है। (सुगंध/प्रकाश/गर्मी)

(ii) मोतियों की माला में .... नज़र नहीं आता। (धागा/सुहागा/उजाला)

(iii) जहाँ अहं का भाव रहता है, वहाँ .... और भक्त के बीच हमेशा दूरी बनी रहती है। (मनुष्य/दास/भगवान)

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

मोर की प्रसन्नता का आधार है–

(क) चकोर ☐ (ख) चंद्र ☐

(ग) घन ☐ (घ) दीपक ☐

11.4 भाषा-प्रयोग

कबीर और रविदास दोनों भक्त कवि थे। ईश्वर की भक्ति में डूबकर उन्होंने स्थानीय बोली में ही इन पदों को सामान्य जनता को कहा है। इन पदों में ब्रज और अवधी भाषा का प्रभाव है। आइए, इन पदों में आए कुछ शब्दों की मदद से विलोम शब्दों के बारे में समझें।

इस पाठ में 'पास', 'न', 'झूठे', 'बरै', 'दिन' और 'स्वामी' जैसे शब्द आए हैं। इन शब्दों का उलटा अर्थ देने वाले शब्द इस प्रकार हो सकते हैं :

पास	–	दूर	ना	–	हाँ
झूठे	–	सच्चे	बरै	–	बुझै
दिन	–	रात	स्वामी	–	सेवक

इस तरह उलटा अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। आइए, कुछ और विलोम शब्द देखें –

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
अमीर	गरीब	अपना	पराया
गुण	दोष	न्याय	अन्याय
सुख	दुख	अँधेरा	उजाला
हल्का	भारी	सजीव	निर्जीव
हानि	लाभ	प्रश्न	उत्तर
पाप	पुण्य	शुभ	अशुभ
खोना	पाना	पास	दूर
कोमल	कठोर	जय	पराजय
सुगंध	दुर्गंध	सोना	जागना
ज्ञान	अज्ञान	आरंभ	अंत

विलोम शब्दों के सामान्य नियम :

- कुछ शब्द अपने मूल रूप में ही उलटा अर्थ देते हैं; जैसे – हानि–लाभ, दिन–रात, अँधेरा–उजाला आदि।

- कुछ शब्दों में उपसर्ग लगा देने से वे उलटा अर्थ देने लगते हैं; जैसे – इच्छा–अनिच्छा, आदर–अनादर, न्याय–अन्याय आदि। अनिच्छा, अनादर, अन्याय में 'अन' उपसर्ग है। 'आदर' शब्द का विलोम 'निरादर' भी हो सकता है। 'निरादर' शब्द में 'निर' उपसर्ग है।
- कुछ शब्द उपसर्ग से युक्त होते हैं। उनके उपसर्ग में बदलाव कर देने से वे उलटा अर्थ देने लगते हैं; जैसे – उन्नति–अवनति, सुगंध–दुर्गंध आदि। 'उन्नति' और 'सुगंध' शब्दों में 'उन' और 'सु' उपसर्ग है। इन उपसर्गों के स्थान पर 'अव' और 'दुर्' उपसर्गों का प्रयोग करके 'अवनति' और 'दुर्गंध' विलोम शब्द बनाए गए।

11.5 आपने क्या सीखा

- सच्ची भक्ति के लिए कर्मकांड, दिखावे और इधर-उधर दौड़ने की ज़रूरत नहीं है।
- अपने भीतर को पहचानना ही ईश्वर की सही खोज है।
- ईश्वर और भक्त का संबंध अटूट एवं अनन्य है।
- विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

11.6 योग्यता-विस्तार

- कबीर एक महान संत, कवि और समाज सुधारक थे। उनका जन्म काशी में हुआ। उनके माता-पिता के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। कबीर का पालन-पोषण नीरू और नीमा नाम के जुलाहा दंपति ने किया था। कबीर ने जीवन भर छुआछूत, जातपात और ढोंग-आडंबर का विरोध किया। कबीर के पद और साखियाँ आज भी जनता में प्रचलित हैं।
- रविदास भी महान संत, कवि और समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। हर वर्ष माघी पूर्णिमा को उनकी जयंती मनाई जाती है। वे जूते सिलकर अपना गुजारा करते थे। साथ ही ईश्वर की भक्ति में भी डूबे रहते थे। वे सुंदर-सुंदर भजन बनाते थे और भाव-विभोर होकर गाते थे। उनका मानना था कि ईश्वर एक है।
- संत कबीर और रविदास के बारे में पुस्तकालय या लोक शिक्षा केन्द्र से पुस्तकें लाकर पढ़िए।
- कबीर और रविदास के काव्य की सी.डी. बाज़ार में मिलती है। संभव हो तो उन्हें खरीद कर लाइए। सीडी लगाकर घर में सुनिए, समझिए और अच्छी बातों को जीवन में उतारिए।

11.7 पाठांत प्रश्न

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

   (i) कबीर के अनुसार ईश्वर कहाँ रहता है?

   ....

   ....

(ii) ईश्वर को पाने के लिए लोग कहाँ-कहाँ जाते हैं?

....

....

(iii) पानी के साथ चंदन को घिसने से क्या होता है?

....

....

(iv) सोने और सुहागे के मेल से क्या होता है?

....

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) कबीर के अनुसार ईश्वर कहाँ है?

(क) मंदिर में ☐ (ख) कैलाश में ☐

(ग) मस्जिद में ☐ (घ) सभी जगह ☐

(ii) कबीर के पद के अनुसार ईश्वर किसको मिलता है?

(क) क्रोधी को ☐ (ख) खोजी को ☐

(ग) लोभी को ☐ (घ) जोगी को ☐

(iii) रैदास के पद के अनुसार यदि ईश्वर चंदन है, तो भक्त क्या है?

(क) ज्ञानी ☐ (ख) दानी ☐

(ग) पानी ☐ (घ) अभिमानी ☐

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
जन्म	....	नया	....
ठण्डा	....	खरा	....

अमृत	....	मूर्ख	....
अच्छा	....	मोटा	....
छोटा	....	सज्जन	....

4. **निम्नलिखित वाक्यों में जो शब्द रेखांकित हैं, उनका विलोम शब्द प्रयोग करके नया वाक्य बनाइए और लिखिए :**

(i) एक महिला खेत में काम कर रही थी।

....

(ii) अँधेरा होने से पहले चले जाना।

....

(iii) आज के खेल में वह हार कर भी जीत गई।

....

11.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. चंदन-पानी, चंद-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा, स्वामी-दास

पाठगत प्रश्न-11.1

1. (i) ईश्वर (ii) महसूस (iii) ईश्वर

2. (क) खोजी को

पाठगत प्रश्न-11.2

1. (i) प्रकाश (ii) धागा (iii) भगवान

2. (ग) घन

❀ ❀ ❀

12

कथा-लेखन

कहानियाँ पढ़ना-सुनना हर किसी को अच्छा लगता है। आपको भी लगता होगा। कभी आपने सोचा है कि कहानी लिखी कैसे जाती है? किसी रचना में वे कौन-कौन सी ज़रूरी बातें होती हैं, जिनसे वह कहानी बनती है। कहानी लिखना कठिन नहीं है; बस, ज़रूरत है कुछ बातों पर ध्यान देने की ओर अभ्यास की। तो आइए, कहानी लिखने का कौशल सीखने के लिए यह पाठ पढ़ते हैं। इसे कथा-पल्लवन भी कह सकते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- दिए गए बिंदुओं के आधार पर कहानी लिख सकेंगे;
- दिए गए शीर्षक पर विचार कर उसके बिंदु निर्धारित कर सकेंगे;
- दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिख सकेंगे;
- दी गई कहानी के मुख्य बिंदुओं का चयन कर सकेंगे;
- पढ़ी या सुनी गई कहानी का शीर्षक लिख सकेंगे;
- पढ़ी या सुनी गई कहानी का निष्कर्ष निकाल सकेंगे।

करके सीखिए

आपने अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी या किसी से भी कोई-न-कोई कहानी सुनी होगी। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

12.1 कथा-लेखन

'कथा-पल्लवन' अथवा 'कथा-लेखन' का अर्थ है दिए गए सूत्रों या बिंदुओं को ध्यान में रखकर कथात्मक विस्तार देना या कहानी को रूप देना। कहानी किसी भी विषय पर लिखी जा सकती है- किसी व्यक्ति पर, घटना पर, स्थिति पर या मन के विचार है आदि पर। पर यह ध्यान रहे कि कहानी के द्‌वारा कोई मुख्य बात ज़रूर प्रकट होती हो। सभी बिंदु उस मुख्य बात से जुड़े हों। आगे चलकर हम आपको ऐसे ही बिंदुओं के आधार पर कहानी लिखने को कहेंगे। अभी तो एक सीख देने वाली कहानी पढ़ते हैं।

12.1.1 अंश-1

एक जंगल में बहुत जानवर रहते थे। वहीं एक झील में सारस भी रहता था। उस झील में पानी पीने के लिए जंगल के सभी पशु-पक्षी आते थे। उनमें एक लोमड़ी भी थी। जब लोमड़ी पानी पीने आती तो वह सारस से खूब बातें करती। उन दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। लोमड़ी बड़ी चालाक थी। उसने एक दिन सारस को अपने यहाँ दावत पर बुलाया। उसने बड़ी अच्छी खीर बनाई थी। उसने वह खीर एक चौड़ी थाली में डाल दी। सारस और लोमड़ी दोनों खाने बैठे। सारस लम्बी चोंच के कारण कुछ भी न खा सका। लोमड़ी सारी खीर चटकर गई। बेचारा सारस भूखा ही घर लौट आया। उसे लोमड़ी पर बड़ा क्रोध आया। सारस ने लोमड़ी को मज़ा चखाने की सोची।

उसने भी लोमड़ी को खीर की दावत पर बुलाया। लोमड़ी नहा-धोकर दावत के लिए पहुँच गई। सारस ने एक लंबी गर्दन वाले बर्तन में खीर डालकर बीच में रख दी। सारस अपनी लम्बी चोंच बर्तन में डालकर मज़े से खीर खाता रहा। बेचारी लोमड़ी उसका मुँह ताकती रह गई। भूख से व्याकुल लोमड़ी दुखी होकर वहाँ से चलने लगी। तब सारस उसे देखकर हँसा और बोला- "दीदी, जैसा करोगे; वैसा ही भरोगे।" यह कहकर वह खिलखिला कर हँस पड़ा। लोमड़ी अपना-सा मुँह लेकर चुपचाप चलती बनी। अब उसे अपने किए पर पश्चाताप हो रहा था।

क्यों, है न अच्छी कहानी? कभी दोस्तों के साथ चलाकी नहीं करनी चाहिए। सेर को सवा सेर मिल ही जाता है। ठीक बात है न!

आइए, अब इस कहानी के बारे में कुछ बातें करते हैं। सबसे पहले शीर्षक के विषय में कुछ चर्चा हो जाए। चाहे कहानी हो, चाहे कोई अन्य रचना उसका शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो मुख्य बात, घटना, विचार अथवा संदेश की ओर संकेत करता हो। आपने जो कहानी पढ़ी उसका शीर्षक देना मुश्किल नहीं है। एक शीर्षक तो कहानी के भीतर ही, अंत में है। याद कीजिए सारस का यह कहना - 'दीदी, जैसा करोगे; वैसा ही

भरोगे।' तो एक शीर्षक तो यही हो सकता है - 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे' - यही बात इस प्रकार भी कही जा सकती है - 'जैसी करनी, वैसी भरनी' या 'जैसे को तैसा'। यह शीर्षक एक विचार को व्यक्त करता है। यह एक उपदेश भी है। इस विचार या उपदेश को कहानी बनाने के लिए कहानी में पात्र जुटाए गए हैं। पात्र हैं - सारस और लोमड़ी। इसमें दो घटनाएँ हैं - लोमड़ी का सारस को भोजन पर बुलाना और सारस का लोमड़ी को भोजन पर बुलाना। इन दोनों की बातचीत संवाद कहलाएँगे। कहानी में एक बात ज़रूर होती है, वह है - जिज्ञासा या कौतूहल। पाठक यह जानने के लिए बेताब रहता है कि आगे क्या हुआ। इस कहानी में यह विशेषता मिलती है। तो इस प्रकार कुछ पात्र, घटनाएँ, संवाद, कथानक मिलकर कहानी के मुख्य विचार या उसके उद्देश्य को व्यक्त करते हैं। उद्देश्य का संबंध कथावस्तु से होता है। आप जब कहानी लिखें तो इन बातों का ध्यान रखें।

पाठगत प्रश्न-12.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सारस लोमड़ी दीदी को देखकर हँसा, क्योंकि वह लोमड़ी को समझाना चाहता था कि-

   (क) खीर खाने के लिए लम्बी चोंच होना ज़रूरी है। ☐

   (ख) जैसा दूसरे के साथ करोगे, वैसा ही तुम्हारे साथ होगा। ☐

   (ग) अच्छी खीर बनाना आसान काम नहीं है। ☐

   (घ) घर से न खाकर चलो तो दूसरे के घर जाकर भूखे ही लौटना पड़ता है। ☐

2. उपर्युक्त कहानी का सही शीर्षक होगा-

   (क) लोमड़ी की चालाकी ☐ (ख) खीर की दावत ☐

   (ग) मित्रता ☐ (घ) सेर को सवा सेर ☐

12.1.2 अंश-2

देखा आपने, कहानी कितनी रोचक विधा है और इसमें कौन-कौन सी बातें होती हैं। चाहें तो आप भी इस आधार पर कहानी लिख सकते हैं। शुरू में छोटी-छोटी कहानियाँ लिखनी चाहिए। कहानियाँ तीन तरह से लिखी जा सकती हैं-

1. पढ़ी या सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना,
2. चित्र देखकर कहानी लिखना, और
3. रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखना।

पढ़ी या सुनी हुई कहानी आप स्वयं लिख सकते हैं। पढ़ी-सुनी कहानी को याद कीजिए - उसके पात्र,

घटनाएँ और मुख्य विचार को भी याद कीजिए और लिखिए। एक बार ठीक से न लिखी जाए तो दोबारा लिखिए। आप अभ्यास से अच्छी कहानी लिख सकते हैं।

कहानी लिखने का दूसरा तरीका है– चित्र देखकर कहानी लिखना। नीचे कहानी के लिए चित्र दिए जा रहे हैं। एक-एक चित्र को देखते जाइए और कहानी को आगे बढ़ाते चलिए, परंतु उससे पहले कुछ ध्यान रखने योग्य बातें जरूर पढ़ लीजिए।

ध्यान रहे

- प्रत्येक चित्र को ध्यान से देखिए।
- एक बार पूरे चित्रों को क्रम से देखिए और समझिए।
- चित्रों के पात्रों और घटनाओं को ठीक से समझिए।
- पूरे चित्र को समझकर कथानक की कल्पना कीजिए।
- चित्रों के क्रम, पात्रों के रूप-स्वरूप, घटनाओं और कल्पना के आधार पर वर्णन कीजिए।
- ध्यान रहे कि कोई घटना छूटनी नहीं चाहिए।
- कहानी ऐसी सरल भाषा में लिखी जाए, जैसी भाषा में सुनाई जाती है।
- कहीं आवश्यक हो तो पात्रों के संवाद भी लिखे जाएँ।
- उपसंहार आकर्षक और स्वभाविक हो।
- अंत में निष्कर्ष भी निकालें तो अच्छा रहेगा।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लिखना शुरू कीजिए :

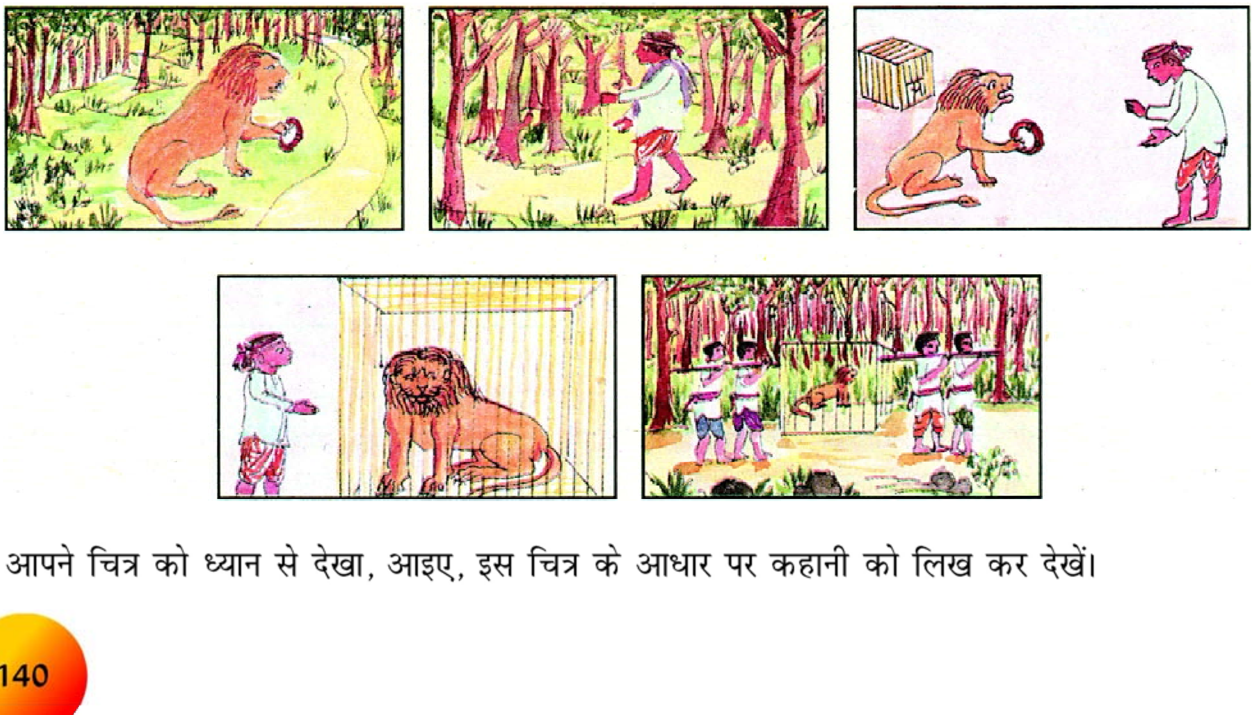

आपने चित्र को ध्यान से देखा, आइए, इस चित्र के आधार पर कहानी को लिख कर देखें।

बूढ़ा शेर और पथिक

एक था- बूढ़ा शेर। अधिक उम्र का होने के कारण वह शिकार नहीं कर पाता था। शिकार के बिना उसे कई दिन भूखा रहना पड़ता था। ऐसे में उसे एक उपाय सूझा। अपने हाथ में एक सोने का कंगन लेकर वह रास्ते के किनारे बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसे एक पथिक आता दिखाई दिया। उसने पथिक को आवाज़ लगाई- "सुनो भाई, मेरे पास एक सोने का कंगन है। मैं इसे दान देना चाहता हूँ। मैंने अपने जीवन में बहुत पाप किए हैं। यह कंगन किसी को दान देकर अपने उन पापों को कम करना चाहता हूँ। यह कंगन तुम ले लो तो मेरे ऊपर तुम्हारा बड़ा उपकार होगा।"

पथिक शेर की चाल समझ गया। उसने भी एक तरकीब निकाली। उसने शेर से कहा- "मैं तुम्हारा कंगन तभी लूँगा, जब तुम वहाँ सामने पड़े पिंजरे में मुझे बंद कर दोगे।"

शेर ने कहा- "लेकिन मैं भला तुम्हें उसमें कैसे बंद करूँगा? मुझे तो आता ही नहीं।"

इस पर पथिक ने कहा- "यह तो बहुत आसान काम है। चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ।"

दोनों पिंजरे के पास पहुँचे। पथिक ने शेर से कहा- "पहले तुम पिंजरे के अंदर घुसो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हें क्या करना होगा।" पथिक की बात मान शेर पिंजरे के अंदर घुसा गया। तभी तपाक से पथिक ने पिंजरे का दरवाज़ा बंद कर दिया और जाकर राजा के सिपाहियों को बता दिया। राजा के सिपाही शेर को पकड़ कर ले गए।

नीचे दिए गए चित्रों के क्रम को देखिए।

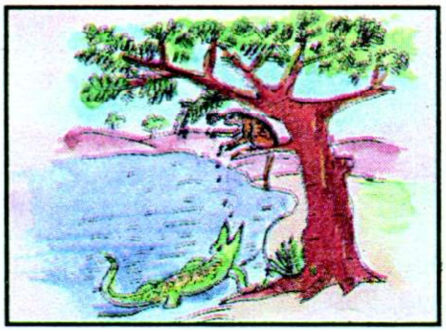
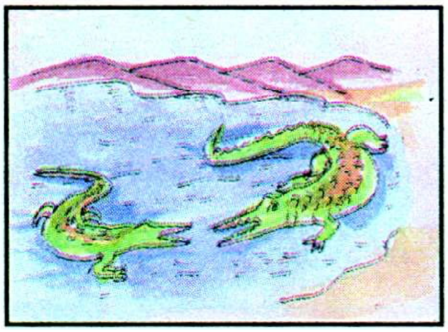
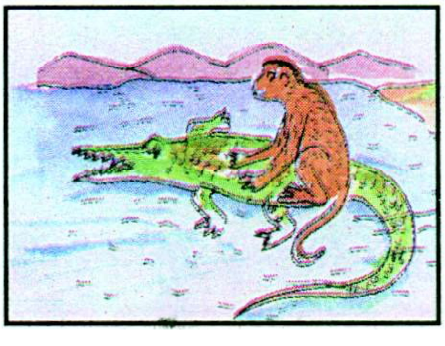
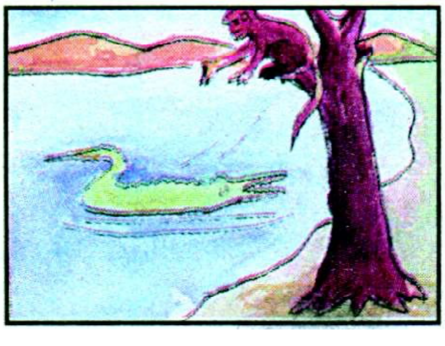

बंदर और मगरमच्छ

अब इन चित्रों को देखकर कहानी के बिंदु सोचिए :

यह कहानी कुछ इस प्रकार बनेगी-

एक तालाब के किनारे एक जामुन का पेड़ था। उस पेड़ पर एक बंदर रहता था। तालाब में एक मगरमच्छ रहता था। मगरमच्छ रोज़ तालाब के किनारे जाता और बंदर जामुन के पेड़ से मीठे-मीठे जामुन तोड़कर उसे खिलाता। मगरमच्छ उनमें से कुछ जामुन अपनी पत्नी के लिए भी ले जाता। इस तरह मगरमच्छ और बंदर में धीरे-धीरे गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन मगरमच्छ की पत्नी ने मगरमच्छ से कहा- "जो रोज़ाना इतने मीठे जामुन खाता है, उसका दिल कितना मीठा होगा! तुम मुझे उसका दिल लाकर दो।" इस पर मगरमच्छ ने उसे बहुत समझाया, पर वह नहीं मानी और उसने खाना-पीना छोड़ दिया।

हार मानकर मगरमच्छ ने बंदर का दिल लाने की एक तरकीब सोची। वह तालाब के किनारे गया और बंदर से कहा- "मित्र! आज तुम्हारी भाभी ने तुम्हें घर खाने पर बुलाया है।"

बंदर ने कहा- "लेकिन मित्र, तुम्हारा घर तो पानी के भीतर है, मैं वहाँ जाऊँगा कैसे?"

"चिंता मत करो, मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं तुम्हें ले चलता हूँ।" मगरमच्छ ने कहा।

बंदर मगरमच्छ की पीठ पर बैठकर दावत खाने के लिए चल पड़ा। तालाब के बीच में पहुँचने के बाद मगरमच्छ को लगा कि बंदर को असली बात बता ही देनी चाहिए। उसने बंदर से कहा- "मित्र, दरअसल बात यह है कि मेरे घर पर कोई दावत वगैरह नहीं है। सच्चाई यह है कि मेरी पत्नी तुम्हारे दिल का भोजन करना चाहती है। इसलिए मैं तुम्हें उसके पास ले जा रहा हूँ।"

बंदर ने छूटते ही कहा- "अरे मित्र, तो यह बात तुम्हें पहले बता देनी चाहिए थी। मैं तो अपना दिल उस जामुन के पेड़ पर ही छोड़ आया। भाभी खाएगी क्या? वापस चलो, उसे लेकर आते हैं।"

मगरमच्छ ने बंदर की बात मान ली और उसे किनारे ले आया। किनारे पहुँचते ही बंदर कूद कर जामुन के पेड़ पर चढ़ गया और बोला- "मूर्ख, कभी किसी का दिल भला पेड़ पर रखा जा सकता है। अब जाओ, लौट जाओ। दोस्त को कभी धोखा नहीं देना चाहिए।"

मगरमच्छ अपना-सा मुँह लेकर वापस लौट गया।

पाठगत प्रश्न-12.2

1. निम्नलिखित में से सही कथन के आगे (✓) और गलत कथन के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(i) कहानी लिखते समय भाषा ऐसी होनी चाहिए, जैसे सुनाई जाती है। ( )

(ii) इस बात का ध्यान ज़रूरी होता है कि कोई बात छूटे नहीं। ( )

(iii) कोई ज़रूरी नहीं कि कहानी चित्रों के अनुसार क्रम से ही हो। ( )

(iv) पात्रों के स्वरूप का वर्णन आवश्यक नहीं होता। ( )

(v) आवश्यकतानुसार पात्रों के संवाद भी लिखने चाहिए। ( )

12.1.3 अंश-3

अभी तक आपने कहानी लिखने के दो तरीके सीखे। कहानी लिखने का तीसरा तरीका है- रूपरेखा के आधार पर कहानी-लेखन। रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखने का एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है। इसे ध्यान से पढ़िए और कहानी लिखने का यह तरीका समझिए।

कहानी का शीर्षक : "अंगूर खट्टे हैं"

कहानी-लेखन के बिंदु :

- एक भूखी लोमड़ी
- खाने की तलाश में बाग में घूमना
- घूमते-घूमते अंगूर के गुच्छे देखना
- अंगूर खाने के लिए बार-बार गुच्छे पर उछलना
- अंगूरों के गुच्छे तक न पहुँच पाना
- निराश होकर अंगूरों की बुराई करना

उक्त बिंदुओं के आधार पर कहानी-लेखन

एक लोमड़ी भूख से परेशान थी। कुछ खाने की तलाश में वह इधर-उधर घूम रही थी। घूमते-घूमते वह एक बाग में पहुँची। वहाँ उसने एक पेड़ के ऊपर अंगूर की बेल देखी। उसमें अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। उन्हें देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी भर आया। वह उन्हें देखकर बहुत खुश थी। अब वह उन्हें खाकर जल्दी ही अपनी भूख मिटा लेगी। उसने इधर-उधर देखा और निश्चिंत हो गई कि उसे कोई नहीं देख रहा था।

उसने अगले पैर को उठाया और गर्दन ऊँची करके अंगूरों तक पहुँचना चाहा। परन्तु अंगूर ऊँचाई पर थे, इसलिए उसे सफलता नहीं मिली। उसने जोर से छलाँग लगाई, पर अंगूरों तक नहीं पहुँच पाई। एक बार फिर छलाँग लगाई, परंतु बेकार। कई छलाँग लगाने पर भी वह अंगूरों तक नहीं पहुँच सकी। अब वह निराश हो चुकी थी। निराश होकर वह बाग से चल दी। बाग से निकलते समय वह दूसरे पशुओं से कह रही थी- "अंगूर खट्टे हैं।"

नीचे एक कहानी की रूपरेखा दी जा रही है। इस रूपरेखा के आधार पर आप भी कहानी लिख कर देखिए।

कहानी का शीर्षक : "राजा और मंत्री"

कहानी के लेखन-बिंदु :
- एक राजा और उसका मंत्री
- राजा की उँगली कटना
- मंत्री का बोलना, "ईश्वर जो करता है, ठीक ही करता है"
- राजा द्वारा मंत्री को जेल में डालना
- राजा का आदिवासी लोगों में फँसना
- राजा की बलि देने का विचार
- बलि देते समय उसी कटी हुई उँगली पर नज़र पड़ना
- राजा को छोड़ देना
- मंत्री को जेल से छोड़ना
- राजा द्वारा अपनी गलती स्वीकार करना

निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर कहानी लिखिए और उसका शीर्षक भी बताइए :

कहानी का शीर्षक : ....

कहानी के लेखन-बिंदु :
- एक भूखी लोमड़ी का खाने की तलाश में घूमना
- पेड़ पर बैठे कौए के मुँह में रोटी का टुकड़ा देखना
- तरकीब समझ में आना
- कौए की प्रशंसा करना और उसे गाने के लिए उकसाना
- कौए का गाने के लिए मुँह खोलना
- रोटी का टुकड़ा गिरना और लोमड़ी का उसे उठाकर भाग जाना

पाठगत प्रश्न-12.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भूख से परेशान लोमड़ी को जंगल में खाने लायक कौन-सी चीज़ मिली?

   (क) बेर ☐ (ख) अंगूर ☐

   (ग) सेब ☐ (घ) अनार ☐

2. जब लोमड़ी फलों तक नहीं पहुँच पाई तो उसने क्या कहा?

(क) मैं कमज़ोर हो गई हूँ	☐	(ख) हिम्मत नहीं हारनी चाहिए	☐
(ग) अंगूर खट्टे हैं	☐	(घ) अंगूर मीठे हैं	☐

12.2 आपने क्या सीखा

- शुरू में कहानियाँ तीन तरह से लिखी जा सकती हैं-
  - किसी पढ़ी या सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में ढालकर
  - दिए गए चित्रों को क्रमानुसार देखकर
  - दी गई रूपरेखा के आधार पर
- कहानी लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें-
  - यदि चित्रों को देखकर कहानी लिखनी है तो पहले चित्रों को ध्यान से देखकर पात्रों और घटनाओं को पूरी तरह समझ लेना चाहिए। फिर उसे अपने शब्दों में ढालना चाहिए।
  - यदि रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखनी है तो रूपरेखा के आधार पर घटनाओं तथा पात्र को समझ कर कहानी लिखनी चाहिए।
  - कहानी की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए, जैसे सुनाई जाती है।
  - कहानी में कोई भी घटना छूटनी नहीं चाहिए।
  - आवश्यकतानुसार पात्रों की आपस में बातचीत भी कराते चलना चाहिए।
  - अंत में उपसंहार आकर्षक और प्रभावी होना चाहिए।
  - यदि संभव हो तो कहानी के माध्यम से दिया गया संदेश भी स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- आपके सामने या जीवन में घटित या आपके द्‌वारा देखी कोई घटना है तो उसके आधार पर भी कहानी लिखी जा सकती है।

12.3 पाठांत प्रश्न

1. अपने आस-पास आजकल में घटित किसी घटना के आधार पर एक कहानी लिखिए।
2. नीचे एक शीर्षक दिया जा रहा है। उसके बाद कुछ बिंदु भी दिए जा रहे हैं। इन बिंदुओं और शीर्षक के आधार पर एक कहानी लिखिए :

शीर्षक : लालच बुरी बला

- एक व्यापारी का बटुआ कहीं खो जाना।

- बटुआ ढूँढने वाले को सौ रुपए इनाम की घोषणा करना।
- एक पनिहारिन को बटुआ मिलना।
- बटुआ लेकर प्रधान के पास जाना।
- व्यापारी के मन में लोभ आना।
- बटुए में 1000 रुपए बताना।
- प्रधान द्वारा उसे बटुए का मालिक न मानना।

3. नीचे दी गई रूपरेखा के आधार पर एक कहानी लिखिए। इसका शीर्षक भी सोचकर लिखिए :
    - एक व्यापारी
    - उसका वफ़ादार कुत्ता
    - धन की कमी होने पर एक साहूकार के पास कुत्ता गिरवी रखना
    - व्यापारी के घर में डाका
    - कुत्ते द्वारा वह स्थान देखना, जहाँ डाकुओं ने माल छुपाया था
    - साहूकार की धोती पकड़कर कुत्ते द्वारा उसे वहाँ ले जाया जाना
    - अपना माल देखकर साहूकार का खुश होना
    - कुत्ते के गले में ख़त बाँधकर उसे व्यापारी के पास भेजना
    - कुत्ते को आता देख व्यापारी का गोली मारना
    - खत पढ़कर पछताना।

12.4 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न-12.1

1. (ख) जैसा दूसरे के साथ करोगे, वैसा ही तुम्हारे साथ होगा
2. (घ) सेर को सवा सेर

पाठगत प्रश्न-12.2

(i)	(✓)	(ii)	(✓)	(iii)	(✗)
(iv)	(✗)	(v)	(✓)		

पाठगत प्रश्न-12.3

1. (ख) अंगूर
2. (ग) अंगूर खट्टे हैं

❀ ❀ ❀

13

ज्योतिषी की बात

हँसना-हँसाना स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। जो लोग हमेशा प्रसन्न रहते हैं, बार-बार खुलकर हँसते हैं- वे स्वस्थ रहते हैं, तनाव और चिन्ता से दूर रहते हैं। हँसने-हँसाने में चुटकुले और मज़ेदार हास्य-कहानियाँ बहुत कारगर हैं। पढ़ते-पढ़ते हँसी आ जाती है और मन हल्का हो जाता है। आइए, ऐसी ही एक हास्य कहानी यहाँ पढ़ते हैं। यह एक लोककथा पर आधारित है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- बिना सोचे-विचारे किए गए कार्य के दुष्परिणाम पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- पाठ में दी गई कहानी में छिपे संदेश को समझकर उसका वर्णन कर सकेंगे;
- संधि के भेदों की पहचान करके उनका प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

लोग मन बहलाने, समय काटने, हँसने-हँसाने और मनोरंजन के लिए कई तरह के साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे किन्हीं तीन साधनों के नाम लिखिए :

....

13.1 मूल पाठ

एक थे रामप्यारे। वे पेशे से लकड़हारा थे। रोज़ जंगल में लकड़ियाँ काटते। लकड़ियों को अपने गधे पर लादकर बाज़ार ले जाते। उससे जो पैसे मिलते, उसी से उनका परिवार चलता।

एक दिन वे पता नहीं किस धुन में थे। डाल पर उल्टी तरफ़ बैठकर लकड़ी काटने लगे। उसी समय वहाँ से एक घुड़सवार गुज़रा। खट-खट की आवाज़ सुनकर उसने ऊपर देखा। रामप्यारे को डाल पर उल्टी तरफ़ बैठा देखकर घुड़सवार ठिठक गया। उसने आवाज़ देकर पूछा – "अरे भाई, ये तुम क्या कर रहे हो?"

रामप्यारे बोले – "लकड़ी काट रहा हूँ। देख नहीं रहे क्या?"

घुड़सवार ने कहा – "देख रहा हूँ, इसीलिए तो पूछ रहा हूँ। तुम गलत ढंग से बैठकर लकड़ी काट रहे हो। जब डाल नीचे गिरेगी, तो साथ में तुम भी गिर जाओगे।"

रामप्यारे को घुड़सवार की यह बात बड़ी बुरी लगी। वे बोले– "क्या मुझे बुद्धू समझ रखा है। ज़िन्दगी बीत गई लकड़ी काटते हुए। अब तुम मुझे लकड़ी काटना सिखाओगे? जाओ-जाओ, अपना रास्ता नापो।"

"ठीक है। मैं तो जा रहा हूँ अपने रास्ते। जब चोट लगेगी, तब पता चलेगा।" इतना कहकर घुड़सवार चला गया।

रामप्यारे फिर से डाल काटने में जुट गए। थोड़ी देर बाद तेज आवाज़ के साथ डाल नीचे गिरी। उसी के साथ रामप्यारे भी नीचे आ गिरे। उन्हें कई जगह चोटें लगीं। जगह-जगह कट-फट गया, खून निकलने लगा। वे जैसे-तैसे उठकर बैठे। अपनी दुर्दशा देखी। तब उस घुड़सवार की याद आई। सोचा, ज़रूर वह कोई बहुत बड़ा ज्योतिषी है। उसने जो कहा, वही हुआ। उससे कुछ और पूछना चाहिए।

रामप्यारे अपने गधे पर बैठकर उधर ही भागे, जिधर घुड़सवार गया था। दो कोस आगे जाकर उन्हें घुड़सवार मिल गया। वह एक पेड़ की छाया में लेटकर आराम कर रहा था। रामप्यारे ने उसके पैर पकड़ लिए। कहा– "आप तो बहुत बड़े ज्योतिषी हैं। जैसा कहा था, वैसा ही हुआ। अब मुझे कुछ और बताइए।"

रामप्यारे की बात सुनकर घुड़सवार परेशान हो गया। बोला – "ज्योतिष से मेरा दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है। मुझे तो अपना ही भविष्य नहीं पता, तुम्हें क्या बताऊँगा। मेरे पैर छोड़ो। अपने घर जाओ।"

रामप्यारे बोले – "ऐसा कहकर मुझे निराश न करो। मैं बीस साल से लकड़ी काट रहा हूँ। कभी नहीं गिरा। आज आपकी भविष्यवाणी सत्य हुई। जब तक आप मेरा भविष्य नहीं बताएँगे, तब तक न तो मैं आपके पैर छोड़ूँगा, न घर जाऊँगा।"

घुड़सवार ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की। लेकिन वे अपनी ज़िद पर अड़े रहे। आखिर में इस मुसीबत से पीछा छुड़ाने के लिए घुड़सवार ने कहा – "ठीक है, पूछो। लेकिन कोई एक ही बात पूछना। मैं एक बार में एक ही बात बताता हूँ।"

रामप्यारे बोले – "जब एक ही बात बतानी है तो यह बता दो कि मैं मरूँगा कब?"

घुड़सवार सोच में पड़ गया। मौत के बारे में भला क्या बता दे। बिना बताए पीछा भी नहीं छूटना था। जब उसे कुछ न सूझा तो कह दिया – "तुम्हारा गधा जब तीन बार छींकेगा, तब तुम मर जाओगे।"

इस तरह पीछा छुड़ाकर घुड़सवार चला गया। रामप्यारे को मौत का भय सताने लगा। अब वे पूरा ध्यान अपने गधे की देखभाल में लगाने लगे। उन्हें सदैव फ़िक्र रहने लगी। कहीं गधे को सर्दी-जुकाम न हो जाए। अगर उसे सर्दी-जुकाम हुआ, तो छींकें आएँगी। छींके आएँगी तो मेरी मौत पक्की। मैं किसी भी कीमत पर गधे को छींकने नहीं दूँगा।

एक दिन वे गधे पर बैठे जंगल से गुजर रहे थे। तभी अचानक गधे को ज़ोर से छींक आ गई। छींक इतनी ज़ोर की थी कि रामप्यारे उछल कर नीचे गिर पड़े। उनके होश उड़ गए। हाय राम! अब क्या होगा? कहीं यह फिर न छींक दे। हर हालत में इसे दूसरी बार छींकने से रोकना होगा। लेकिन कैसे रोकूँ। जब उन्हें कुछ नहीं सूझा तो दोनों हाथों से गधे का मुँह और नथुना जकड़ लिया। गधे को साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। वह अंदर-ही-अंदर फूल रहा था। छटपटा रहा था। उसकी अंदर की साँस अंदर ही फँसी पड़ी थी। इस घुटन से छुटकारा पाने के लिए उसने पूरा ज़ोर लगाकर फिर छींक मारी। छींक के साथ ही रामप्यारे छिटक कर दूर जा गिरे।

इस दूसरी छींक ने तो उनके दिमाग की बत्ती ही बुझा दी। कुछ सुझाई नहीं पड़ रहा था। गधा अब साक्षात यमराज लगने लगा। गधे के नथुने किसी तोप के मुँह जैसे लगने लगे, जिनका निशाना उनकी तरफ़ था। पता नहीं कब धमाका हो जाए। वे उसकी तीसरी छींक रोकने के लिए इधर-उधर भाग-भाग कर कुछ खोज रहे थे। संयोग से उन्हें आँवले के बराबर के दो गोल-गोल पत्थर मिल गए। पत्थर मिलते ही उनकी आँखों में चमक आ गई। उन्होंने झटपट एक-एक पत्थर गधे के दोनों नथुनों में ठोंक दिया।

नथुनों में पत्थर ठोंकने के बाद उन्हें बड़ी राहत मिली। कमर पर हाथ रखकर वे गधे के सामने खड़े हो गए। बोले – "चलो बेटा, अब छींक के दिखाओ। बहुत चले थे छींकने।"

नथुनों में ठुँसे पत्थरों से गधे की साँस घुटने लगी। वह पत्थरों को निकाल फेंकने के लिए कसमसा रहा था। अंदर-ही-अंदर फूलता जा रहा था। रामप्यारे को पक्का यकीन था कि अब गधा नहीं छींक पाएगा। वे बड़ी शान से गधे के सामने खड़े उसे चुनौती दे रहे थे।

गधा भी आखिर कब तक बर्दाश्त करता। वह धीरे-धीरे ज़ोर लगाता रहा, और फिर पूरी ताकत बटोरकर ज़ोर से छींक पड़ा। उसके छींकते ही दोनों पत्थर बन्दूक की गोलियों की तरह निकले, और सड़ाक-सड़ाक रामप्यारे के माथे में धँस गए। पत्थर लगते ही वे धराशायी हो गए। अब वे सोच रहे थे कि घुड़सवार सचमुच बहुत बड़ा ज्योतिषी था। उसकी भविष्यवाणी सच हो गई। इस तरह रामप्यारे सचमुच राम को प्यारे हो गए।

– लायक राम मानव

शब्दार्थ

घुड़सवार	=	घोड़े की सवारी करने वाला	सदैव	=	हमेशा
			निराश	=	नाउम्मीद
ठिठक गया	=	रुक गया	अचानक	=	एकाएक
दुर्दशा	=	खराब हालत	साक्षात	=	सामने मौजूद
ज्योतिषी	=	भविष्य बताने वाला	यमराज	=	मौत के देवता
भविष्य	=	आगे आने वाला समय	दिमाग की बत्ती बुझना	=	दिमाग काम न करना
सुझाई न पड़ना	=	समझ में न आना	धराशायी हो जाना	=	ज़मीन पर गिर जाना
आँखों में चमक आना	=	खुश होना	चुनौती देना	=	ललकारना
फ़िक्र	=	चिन्ता	राम को प्यारे होना	=	मर जाना

13.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. रामप्यारे कैसे लकड़ी काट रहे थे?

   (क) गधे पर बैठकर ☐

   (ख) डाल पर उल्टी तरफ़ बैठकर ☐

   (ग) ज़मीन पर खड़े होकर ☐

   (घ) सीढ़ी पर चढ़कर ☐

2. गधे के दो बार छींकने के बाद राम प्यारे ने क्या किया?

   (क) गधे को बुरी तरह पीटा ☐

   (ख) ज्योतिषी के पास भागे ☐

   (ग) गधे के नथुनों में पत्थर ठोंक दिए ☐

   (घ) गधे के नथूनों को दोनों हाथों से जकड़ा ☐

13.3 आइए समझें

13.3.1 अंश–1

एक थे रामप्यारे .... कुछ और पूछना चाहिए।

अगर कोई पेड़ की डाल पर उल्टा बैठकर लकड़ी काटे, तो क्या होगा? ज़ाहिर है डाल कटने पर वह भी डाल के साथ नीचे गिर जाएगा। उस व्यक्ति को आप क्या कहेंगे? शायद बुद्धू और बेवकूफ़ कहें। रामप्यारे भी उल्टे बैठकर लकड़ी काट रहे थे। लेकिन क्या वे बेवकूफ़ थे। वे कहते हैं– "ज़िंदगी बीत गई लकड़ी काटते।" लकड़हारे तो थे ही। रोज लकड़ी काटते थे। अगर वे बेवकूफ़ होते तो इसके पहले भी कई बार गिर चुके होते। कहानी में कहा गया है– पता नहीं वे किस धुन में थे। यह सच है। किसी दूसरी धुन में जब कोई काम किया जाता है तो काम में गलती हो सकती है। शायद रामप्यारे के साथ भी यही हुआ होगा।

रामप्यारे जब नीचे गिरकर चोट खा जाते हैं, तो उन्हें घुड़सवार की याद आती है। उन्हें लगता है कि घुड़सवार कोई ज्योतिषी होगा। तभी तो उसका कहा हुआ सच हो गया। वे अपने भविष्य के बारे में और बातें जानने के लिए उधर ही चल पड़ते हैं, जिधर घुड़सवार गया था। इन बातों से यह स्पष्ट होता है कि रामप्यारे बेवकूफ़ भले न हो, लेकिन सोचने-समझने की कमी उनमें ज़रूर थी। कोई काम शुरू करने से पहले या कोई फ़ैसला लेने से पहले सोच-विचार नहीं करते थे। अगर ऐसा होता तो नीचे गिरने के बाद वे सोचते कि उनके साथ ऐसा क्यों हुआ?

पाठगत प्रश्न–13.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. किसी दूसरी धुन में कोई काम करने पर क्या हो सकता है?

   (क) काम अच्छा हो सकता है। ☐

   (ख) काम पूरा हो सकता है। ☐

   (ग) काम में गलती हो सकती है। ☐

   (घ) काम जल्दी हो सकता है। ☐

2. रामप्यारे में किस बात की कमी थी?

   (क) हँसने-मुस्कुराने की ☐

   (ख) रोने-पीटने की ☐

   (ग) झूठ बोलने की ☐

   (घ) सोचने-समझने की ☐

13.3.2 अंश–2

रामप्यारे अपने गधे पर बैठकर .... तब तुम मर जाओगे।"

घुड़सवार ने रामप्यारे को बहुत समझाने की कोशिश की, कि वह ज्योतिषी नहीं है। लेकिन रामप्यारे ने एक न सुनी। उन्होंने घुड़सवार को अपना भविष्य बताने पर मज़बूर कर दिया। इसका मतलब रामप्यारे अपनी धुन के पक्के थे। धुन का पक्का होना बहुत अच्छा होता है, लेकिन धुन की दिशा ठीक होनी चाहिए। घुड़सवार भी क्या करता। अपना पीछा छुड़ाने के लिए उसे कुछ–न–कुछ तो कहना ही था। उसने कह दिया– "जब तुम्हारा गधा तीन बार छींकेगा, तो तुम मर जाओगे।" इस तरह बोलकर उसने अपना पीछा छुड़ाया। इसके पीछे उसकी कोई गलत मंशा नहीं थी।

पाठगत प्रश्न–13.2

1. दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह पर लिखिए :

(i) घुड़सवार ने कहा कि वह .... नहीं है। (बेवकूफ़ / ज्योतिषी / मतलबी)

(ii) रामप्यारे ने घुड़सवार को भविष्य बताने पर .... कर दिया। (दूर / मशहूर / मज़बूर)

(iii) रामप्यारे धुन के .... थे। (पक्के / सच्चे / कच्चे)

13.3.3 अंश–3

इस तरह पीछा छुड़ाकर .... राम को प्यारे हो गए।

भविष्यवाणी सुनकर रामप्यारे को मौत का भय सताने लगा। उनका पूरा समय गधे की देख–रेख में बीतने लगा। कहीं उसे जुकाम न हो जाए, कहीं उसे छींक न आ जाए। लेकिन हुआ क्या? लाख कोशिशों के बाद भी गधे को छींक आ गई। दूसरी छींक न आने पाए, उसे रोकने के लिए उन्होंने हाथ से उसके नथुने दबोच लिए। वैसे शायद दूसरी छींक न भी आती, लेकिन साँस रुकने से गधे ने ज़ोर लगाया। दूसरी छींक भी आ गई। उनके दिमाग में बैठा हुआ था कि तीसरी छींक आई तो मौत निश्चित है। उसे किसी भी तरह रोकना है।

रामप्यारे को कुछ नहीं सूझा तो गधे के नथुनों में पत्थर ठोंक दिए। फिर वही गलती। गधे की साँस फिर रुकने लगी। छींक रोकने के लिए रामप्यारे ने दिमाग तो खूब लगाया। उन्हें पक्का विश्वास था कि छींक अब किसी कीमत पर नहीं आ सकती। लेकिन रामप्यारे में सामान्य ज्ञान की कमी थी। साँस लेने में जब कोई चीज़ फँसती है तो उस रुकावट को दूर करने के लिए छींक आना स्वाभाविक है। गधा अंदर–ही–अंदर फूलता रहा। उसके बाद पूरा ज़ोर लगाकर छींक पड़ा। रुकावट जितनी ज़्यादा होगी, छींक भी उतनी ही तेज़ होगी। दोनों पत्थर बंदूक की गोली की तरह निकले। उन्हीं से रामप्यारे की मौत हो गई।

आपको क्या लगता है? रामप्यारे की मौत का ज़िम्मेदार कौन था – घुड़सवार, गधा या रामप्यारे खुद? सारी परिस्थिति पर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि रामप्यारे खुद, उनकी नासमझी ज़िम्मेदार थी। वे गधे की छींक रोकने की कोशिश न करते तो शायद उसे छींक न आती।

पाठगत प्रश्न-13.3

1. दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(i) लाख कोशिशों के बाद भी .... को छींक आ गई। (रामप्यारे / गधे / घुड़सवार)

(ii) गधा अंदर-ही-अंदर .... लगा। (झूलने / भूलने / फूलने)

(iii) दोनों पत्थर .... की गोली की तरह निकले। (बंदूक / उपचार / चूरन)

13.3 भाषा-प्रयोग

इस हास्य-कथा में अत्यंत सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। लोककथा की शैली में होने के कारण भाषा में बोलचाल के शब्दों का प्रयोग अधिक है। प्रसंग के अनुसार जहाँ-तहाँ मुहावरों का भी प्रयोग है; जैसे- होश उड़ जाना, दिमाग की बत्ती बुझ जाना, धराशायी हो जाना, राम को प्यारे हो जाना आदि। आइए पाठ में आए कुछ शब्दों के माध्यम से संधि के बारे में समझें।

इस पाठ में सदैव, संयोग, निराश शब्द आए हैं। ये तीनों शब्द दो-दो शब्दों से मिलकर बने हैं; जैसे–

सदा + एव = सदैव

सम् + योग = संयोग

निः + आश = निराश

यहाँ दो शब्दों का मिलना वैसा नहीं है जैसा समास में होता है। यहाँ दो अक्षर या वर्ण पास-पास आते हैं और उनके मेल से बदलाव होता है। इस बदलाव को ही संधि कहते हैं।

इस तरह | दो वर्णों के मेल से जो बदलाव होता है, उसे संधि कहते हैं। |

संधि तीन प्रकार की होती है–

स्वर-संधि

व्यंजन-संधि

विसर्ग-संधि

'सदैव' शब्द स्वर-संधि से, 'संयोग' शब्द व्यंजन-संधि से और 'निराश' शब्द विसर्ग संधि से बना है।

आइए, इनमें से स्वर-संधि के बारे में विस्तार से जानें।

स्वर-संधि – दो स्वरों के मेल से जो बदलाव होता है, उसे स्वर-संधि कहते हैं, जैसे– विद्या + आलय = विद्यालय। स्वर-संधि के पाँच प्रकार हैं– दीर्घ, गुण, वृद्‌धि, यण और अयादि। आइए इन्हें विस्तार से समझें–

- **दीर्घ स्वर-संधि –** एक समान स्वरों का मेल होने से वे दीर्घ हो जाते हैं; जैसे – अ + अ = आ, अ + आ = आ, आ + आ = आ, इ + इ = ई, इ + ई = ई, ई + ई = ई, उ + उ = ऊ, उ + ऊ = ऊ, ऊ + ऊ = ऊ।

  दीर्घ स्वर-संधि के कुछ उदाहरण– धर्म + अर्थ = धर्मार्थ, हिम + आलय = हिमालय, रवि + इंद्र = रवींद्र, गिरि + ईश = गिरीश, भानु + उदय = भानूदय।

- **गुण स्वर-संधि–** जब अ, आ के साथ इ या ई का मेल होता है तो ए हो जाता है; जैसे– नर + ईश = नरेश (अ + ई = ए), महा + इंद्र = महेन्द्र (आ + इ = ए)।

  जब अ, आ के साथ उ या ऊ का मेल हो तो ओ हो जाता है, जैसे – महा + उत्सव = महोत्सव (आ + उ = ओ), सूर्य + उदय = सूर्योदय। जब अ, आ के साथ ऋ का मेल होता है तो अर् हो जाता है; जैसे – देव + ऋषि = देवर्षि (अ + ऋ = अर्), महा + ऋषि = महर्षि (आ + ऋ = अर्)।

- **वृद्‌धि स्वर-संधि –** जब अ, आ के साथ ए या ऐ का मेल होता है तो ऐ हो जाता है; जैसे – मत + ऐक्य = मतैक्य (अ + ऐ = ऐ), सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)।

  जब अ, आ के साथ ओ या औ का मेल होता है तो औ हो जाता है; जैसे – जल + ओघ = जलौघ, वन + औषधि = वनौषधि (अ + औ = औ)।

- **यण स्वर-संधि –** जब इ, ई का मेल असमान स्वर जैसे अ या आ से होता है, तो य् हो जाता है; जैसे – यदि + अपि = यद्‌यपि (इ + अ = य्), इति + आदि = इत्यादि (इ + आ = य्)।

  इसी प्रकार जब उ, ऊ का मेल असमान स्वर जैसे अ, आ, ए या ऐ से होता है तो व् हो जाता है जैसे – सु + आगत = स्वागत (उ + आ = व्), अनु + एषण = अन्वेषण (उ + ए = व्)।

- **अयादि स्वर-संधि –** जब ए, ऐ, ओ, औ का मेल इनके अलावा किन्हीं दूसरे स्वरों से होता है तो ये क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं, जैसे – ने + अन = नयन (ए + अ = अय्), गै + अक = गायक (ऐ + अ = आय्), पो + अन = पवन (ओ + अ = अव्), पौ + अक = पावक (औ + अ = आव्)।

  व्यंजन और विसर्ग-संधि के विषय में आप आगे के स्तरों में पढ़ेंगे।

13.5 आपने क्या सीखा

- काम में ध्यान न हो तो गलती की संभावना ज़्यादा होती है।
- जल्दबाज़ी में और बिना सोच-विचारे कोई कार्य नहीं करना चाहिए।
- अंधविश्वास के स्थान पर कारण-कार्य संबंधों की खोज की जानी चाहिए।
- दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।
- संधि के तीन भेद हैं– स्वर-संधि, व्यंजन-संधि और विसर्ग-संधि।
- दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार को स्वर-संधि कहते हैं।

13.6 योग्यता-विस्तार

- हँसना-हँसाना, स्वास्थ्य के लिए उत्तम औषधि है। हमेशा खुश रहने और हँसने-हँसाने के बहाने ढूँढ़िए। हँसने-हँसाने का कोई भी मौका मत छोड़िए। छोटी-छोटी चीज़ों में खुशियाँ खोजिए।
- समाज में प्रचलित अनेक प्रकार के अंधविश्वासों पर अच्छी तरह से विचार कीजिए और उन्हें दूर करने के उपाय ढूँढ़िए।
- हँसी के कारणों पर केवल हँसना ही नहीं चाहिए, उनसे सीख लेकर विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए।

13.7 पाठांत प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

   (i) रामप्यारे पेड़ से नीचे क्यों गिरे?

   ....

   (ii) नीचे गिरने के बाद रामप्यारे ने क्या किया?

   ....

   (iii) रामप्यारे ने घुड़सवार से कौन-सा एक प्रश्न पूछा?

   ....

(iv) घुड़सवार ने रामप्यारे की मौत के बारे में क्या बताया?

....

(v) रामप्यारे की मौत का ज़िम्मेदार कौन था? घुड़सवार, गधा या रामप्यारे खुद?

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) रामप्यारे को चोट कैसे लगी?

(क) गधे के लात मारने से ☐

(ख) टक्कर लगने से ☐

(ग) पेड़ से गिरने से ☐

(घ) ठोकर लगने से ☐

(ii) चोट लगने के बाद रामप्यारे को किसकी याद आई?

(क) गधे की ☐

(ख) घुड़सवार की ☐

(ग) लकड़ियों की ☐

(घ) भगवान की ☐

(iii) रामप्यारे ने घुड़सवार से एक सवाल किसके बारे में पूछा?

(क) अपनी मौत के बारे में ☐

(ख) गधे के बारे में ☐

(ग) अपने रोज़गार के बारे में ☐

(घ) अपने बच्चे के बारे में ☐

(iv) रामप्यारे की मौत कैसे हुई?

(क) पेड़ से गिरने से ☐

(ख) बीमारी से ☐

(ग) पानी में डूबने से ☐

(घ) गधे के छींकने से ☐

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) संधि किसे कहते हैं?

....

(ii) सम् + योग = संयोग। इसमें कौन-सी संधि है?

....

(iii) निः + आशा = निराशा। इसमें कौन-सी संधि है?

....

(v) संधि करके लिखिए।

आ + इ = ... आ + उ = ... इ + अ = ...

ओ + अ = ... उ + ए = ... ई + ई = ...

4. कौन-सी बात किसने कही, उसका नाम लिखिए :

(i) "अरे भाई, ये तुम क्या कर रहे हो?" ....

(ii) "क्या मुझे बुद्धू समझ रखा है।" . ...

(iii) "ऐसा कहकर मुझे निराश न करो।" ....

(iv) "ज्योतिष से मेरा दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है।" ....

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

एक सियार था। एक दिन उसकी पूँछ में कहीं से एक कागज़ का टुकड़ा चिपक गया। बहुत कोशिश के बाद भी वह नहीं छूटा। जब वह वापस अपने साथियों के बीच पहुँचा तो सबने उस कागज़ के बारे में पूछा। सियार ने शेखी बघारी– "यह जंगल का पट्टा है। सरकार ने यह जंगल मेरे नाम कर दिया है। अब हम कहीं भी जाँए, कुछ भी करें, कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

सियार की बात सुनकर सभी साथी खुश हो गए। खुश होकर उछलने-कूदने लगे। तभी वहाँ कुछ शिकारी कुत्ते आ गए। खूँखार कुत्तों को देखकर सियार जान बचाने के लिए भागने लगा। साथियों ने

कहा– "अरे भाग क्यों रहे हो? जंगल का पट्टा दिखा दो ना।"

सियार भागते-भागते बोला– "अरे ये पढ़े-लिखे नहीं हैं। इन्हें क्या पट्टा दिखाऊँ। भाग कर अपनी जान बचाओ।" यह सुनकर सभी गिरते-पड़ते भागने लगे। भागते-भागते पट्टे वाला सियार गिर पड़ा। कुत्तों ने उसे नोच डाला।

(i) सियार की पूँछ में क्या चिपक गया?

....

(ii) सियार ने कागज़ के बारे में साथियों को क्या बताया?

....

(iii) सियार क्यों भागने लगा?

....

(iv) सियार को भागता देख साथियों ने क्या कहा?

....

(v) अंत में सियार के साथ क्या हुआ?

....

13.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ख) डाल पर उल्टी तरफ़ बैठकर।
2. (ग) गधे के नथुनों में पत्थर ठोंक दिए।

पाठगत प्रश्न-13.1

1. (ग) काम में गलती हो सकती है।
2. (क) सोचने-समझने की।

पाठगत प्रश्न-13.2

1. (i) ज्योतिषी

   (ii) मज़बूर

   (iii) पक्के

पाठगत प्रश्न-13.3

1. (i) गधे

   (ii) फूलने

   (iii) बंदूक

❀ ❀ ❀

14

कुंभ का मेला

हमारे देश में कई मेले लगते हैं। मेले मेल-मिलाप कराते हैं। प्रेम और भाईचारे की भावना जगाते हैं। लोगों को संस्कारवान बनाते हैं। संस्कृति को ज़िंदा रखते हैं। इन मेलों में से कुंभ का मेला सबसे बड़ा मेला है। यह मेला चार स्थानों पर और हर स्थान पर बारह वर्ष में लगता है। इस मेले में पूरे देश से और विदेश से भी लोग आते हैं। यहाँ श्रद्धा, विश्वास और आस्था का अनुपम संगम देखने को मिलता है। यह मेला नदियों को शुद्ध और पवित्र बनाए रखने का संदेश देता है। इस पाठ से हम कुंभ मेले की जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- संस्कृति, प्रेम और भाईचारे के महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे;
- मेले के दृश्य का उल्लेख कर सकेंगे;
- नदियों के जल में बढ़ते प्रदूषण के कारण का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रदूषण रोकने के उपाय रेखांकित कर सकेंगे;
- समास और उसके भेदों को पहचान कर समस्त पदों का प्रयोग सकेंगे।

करके सीखिए

- आपने कोई–न–कोई मेला ज़रूर देखा होगा। उस मेले के बारे में कोई चार बातें लिखिए :

....

....

....

....

14.1 मूल पाठ

पावन भूमि प्रयाग की, करती दुनिया याद।
मेला लगता कुंभ का, बारह बरसों बाद।।

कुंभ का मेला दुनिया का सबसे बड़ा मेला है। यह मेला कब शुरू हुआ। कोई नहीं जानता। हाँ, प्राचीन काल से चला आ रहा है। हर बारह साल बाद यह मेला लगता है। यह देश के चार स्थलों– प्रयाग, नासिक, हरद्वार और उज्जैन में लगता है। हरद्वार और प्रयाग में अर्धकुंभ भी लगता है, जो हर छह वर्ष में लगता है।

कुंभ के मेले के पीछे एक पौराणिक कथा है। एक बार समुद्र–मंथन हुआ। इसमें चौदह रत्न निकले। एक रत्न था– अमृत कलश। अमृत पाने के लिए देवता और दानव आपस में लड़ने लगे। भगवान विष्णु के इशारे पर जयंत कलश को ले भागे। जयंत इंद्र के पुत्र थे। दानव, जयंत का पीछा करते रहे। जयंत भी भागते रहे। अमृत कलश को बचाते रहे। अमृत कलश को उन्होंने चार स्थानों पर रखा। वहाँ अमृत की कुछ बूँदें छलक पड़ीं। इन चारों स्थानों को पवित्र माना गया। इन्हीं स्थानों पर कुंभ का मेला लगता है।

इलाहाबाद में त्रिवेणी-संगम के किनारे कुंभ का मेला लगता है। इलाहाबाद में गंगा और यमुना का संगम होता है। माना जाता है कि अदृश्य रूप में सरस्वती नदी भी यहीं आकर मिलती है इसलिए इसे त्रिवेणी संगम कहा जाता है। ऐसे ही हरद्वार में गंगा नदी के किनारे और उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे कुंभ लगता है। नासिक में कपिला और गोदावरी नदियों के संगम-स्थल पर यह मेला लगता है।

यह मेला बहुत ही विशाल होता है। अपार भीड़ होती है। चारों तरफ़ लोग-ही-लोग। महिला, पुरुष, बच्चे, बूढ़े सभी यहाँ आते हैं। इन दिनों खूब ठंड पड़ती है। फिर भी लोग नहीं रुकते। आस्था का सैलाब उमड़ पड़ता है। देश के हर प्रांत से लोग यहाँ आते हैं। गरीब-अमीर सभी एक ही रंग में रंग जाते हैं– आस्था के रंग में।

मेला लगने से पहले ही कई प्रकार की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। नई सड़कें बनती हैं। पुरानी सड़कों की मरम्मत होती है। बिजली-पानी की व्यवस्था दुरुस्त की जाती है। आने-जाने के लिए पुल बनाए जाते हैं। लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए विशेष प्रबंध किए जाते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से कई तरह के बंदोबस्त किए जाते हैं। यात्रियों की सुख-सविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

मेले में यात्रियों की संख्या हर साल बढ़ती जाती है। विदेश से भी बहुत बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। कुंभ का मेला पूरी दुनिया के लोगों को अपनी ओर खींचता है, आकर्षित करता है।

पहले महाकुंभ का आयोजन दशनामी अखाड़े सँभालते थे। वे पेशवाई करते थे। पेशवाई फ़ारसी का शब्द है। इसका अर्थ है सम्मान करना। आज भी दशनामी संन्यासी तीर्थराज में हाज़िरी देते हैं। अपने वैभव का भी प्रदर्शन करते हैं।

कुंभ के मेले में संतों का विराट सम्मेलन होता है। देश भर के साधु-संत आते हैं। साधु-समाज के चौदह अखाड़े हैं। ये अखाड़े अपने पूरे लश्कर के साथ आते हैं। मेले के दौरान शाही स्नान देखने योग्य होता है। सभी अखाड़े धूमधाम से जुलूस के रूप में निकलते हैं। जुलूस में हाथी, घोड़े, बग्घियाँ आदि होती हैं। ढोल-नगाड़े बजते हैं। साधु नाचते-गाते चलते हैं। उल्लास का सागर उफान मारता है। मनोरम नज़ारे दिखाई देते हैं।

कुंभ स्नान के साथ जुड़ी हैं पवित्र नदियाँ। हम इन्हें माँ का दर्ज़ा देते हैं। इनकी जय-जयकार करते हैं। मगर, खेद की बात है, हमने इन्हें मैला कर डाला है। इनकी गोद में क्या-क्या डालते हैं? और ऐसा करते हुए कभी नहीं सोचते। पूजा की सामग्री, प्लास्टिक की थैलियाँ, कारखानों का अवशेष और न जाने क्या-क्या, कूड़ा–करकट तक इन्हीं में डालते हैं।

आइए, हम सोचें। मिलकर विचार करें। हम संकल्प लें। सौगंध खाएँ। नदियों में गंदगी न डालेंगे और न डालने देंगे। नदियों को स्वच्छ रखेंगे। पवित्र रखेंगे। यदि इन बातों का ध्यान रखेंगे तो कुंभ-स्नान सार्थक होगा। कुंभ-पर्व फलदायी होगा।

– गोपाल प्रसाद मुद्गल

शब्दार्थ

पावन	=	पवित्र	सैलाब	=	बाढ़ / लोगों की भीड़
प्राचीन	=	पुराना	दुरुस्त	=	ठीक
पौराणिक	=	पुराणों से संबंधित	बंदोबस्त	=	प्रबंध / इंतज़ाम
मंथन	=	मथना	विराट	=	बहुत बड़ा
दानव	=	राक्षस	लश्कर	=	साजोसामान के साथ
त्रिवेणी संगम	=	तीन नदियों के मिलने का स्थान	दौरान	=	बीच / मध्य
			उल्लास	=	प्रसन्नता / खुशी
अपार	=	जिसका पार न पाया जा सके	मनोरम	=	मन को खुशी देने वाले
			अवशेष	=	बचा हुआ
आस्था	=	गहरा विश्वास	पीड़ित	=	दुखी

14.2 बोध-प्रश्न

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(i) अर्धकुंभ कितने वर्ष बाद लगता है?

(क) हर 12 वर्ष बाद ☐ (ख) हर 14 वर्ष बाद ☐

(ग) हर 6 वर्ष बाद ☐ (घ) हर 3 वर्ष बाद ☐

(ii) समुद्र-मंथन में कितने रत्न निकले थे?

(क) नौ रत्न ☐ (ख) चौदह रत्न ☐

(ग) पाँच रत्न ☐ (घ) अनगिनत ☐

(iii) कुंभ के समय मौसम कैसा होता है?

(क) बहुत ठंडा ☐ (ख) बहुत गर्म ☐

(ग) न ठंडा, न गर्म ☐ (घ) बरसात का ☐

14.3 आइए समझें

14.3.1 अंश–1

पावन भूमि प्रयाग की .... ध्यान रखा जाता है।

कुंभ मेले के बारे में आपने ज़रूर सुना होगा। शायद गए भी होंगे। यह दुनिया का सबसे बड़ा मेला माना जाता है। देश-विदेश से लाखों लोग यहाँ इकट्ठा होते हैं। कुंभ मेला कब शुरू हुआ? किसने शुरू किया? कुछ पता नहीं, परंतु पौराणिक काल से ही यह हमारी संस्कृति का हिस्सा बना हुआ है। यह हमारे देश की पहचान है। महीनों चलने वाला कुंभ मेला उस दौरान लाखों लोगों को रोज़ी-रोटी देता है। मनोरंजन करता है। धार्मिक संतुष्टि देता है। यहाँ हर धर्म, हर जाति के लोग आते हैं। यहाँ केवल नदियों का ही संगम नहीं होता; बल्कि धर्मों, जातियों, बोलियों, संस्कृतियों और विचारों का भी संगम होता है। यह मेला राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

सरकार की ओर से महीनों पहले ही मेले की तैयारी शुरू कर दी जाती है। सड़कें, बिजली, पुल, स्वास्थ्य केन्द्र, पुलिस चौकी, रैन बसेरे, शौचालय, पेय-जल आदि तमाम चीज़ों की व्यवस्था की जाती है। इस पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं। कोशिश यही रहती है कि मेले के दौरान कोई गड़बड़ी न हो, किसी को कोई असुविधा न हो।

पाठगत प्रश्न-14.1

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर खाली जगह लिखिए :

(i) कुंभ मेला .... सबसे बड़ा मेला माना जाता है। (उज्जैन / प्रयाग का / दुनिया का)

(ii) कुंभ मेला .... एकता का प्रतीक है। (आर्थिक / राष्ट्रीय / बौद्धिक)

(iii) गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम को .... संगम कहा जाता है। (कुंभ/ त्रिवेणी / मंथन)

14.3.2 अंश-2

मेले में यात्रियों ....फलदायी होगा।

कुंभ के मेले में संतों-महात्माओं का भी संगम होता है। विशेष पर्वों पर शाही स्नान होते हैं। जगह-जगह भजन-कीर्तन और प्रवचन होते हैं। लाखों लोग रोज़ पवित्र नदी में स्नान करते हैं। कुंभ का मेला किसी-न-किसी नदी के तट पर ही लगता है। नदियों की पवित्रता खतरे में पड़ती जा रही है। उनका पानी प्रदूषित होता जा रहा है। एक तरफ़ हम पवित्र और मोक्षदायिनी मानकर उसमें स्नान करते हैं। जल भरकर घर लाते हैं। दूसरी तरफ़ उसी जल को गंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

नदियाँ हमारे लिए तभी तक कल्याणकारी होंगी, जब तक वे स्वच्छ रहेंगी, उनका जल शुद्ध रहेगा। हम नदियों के प्रति श्रद्धा रखते हैं, तो उनकी सुरक्षा भी करनी होगी। हमें सोचना होगा कि हम नदियों की स्वच्छता के लिए क्या-क्या कर सकते हैं। पूरे समाज को इसके लिए जागरूक करना होगा।

पाठगत प्रश्न-14.2

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर खाली जगह लिखिए :**

   (i) कुंभ के समय लाखों लोग .... नदी में स्नान करते हैं। (विचित्र / पवित्र / अपवित्र)

   (ii) नदियों की पवित्रता .... में पड़ती जा रही है। (खतरे / भाड़ / खटाई)

   (iii) हमें पूरे समाज को .... करना होगा। (साक्षर / शक्तिशाली / जागरूक)

14.4 भाषा-प्रयोग

यह पाठ सरल खड़ी बोली में लिखा गया है। लिखने की शैली ऐसी है कि कुंभ मेले का पूरा दृश्य उपस्थित हो जाता है। पाठ के प्रारम्भ में एक दोहा भी जोड़ा गया है। बीच-बीच में सामासिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। आइए इन शब्दों के माध्यम से समास के बारे में जानें।

निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए :

समुद्र-मंथन, अमृत-कलश, देवता-दानव, त्रिवेणी-संगम, आने-जाने, साधु-समाज, ढोल-नगाड़े, कूड़ा-करकट, कुंभ-स्नान, कुंभ-पर्व शब्दों को आपने इस पाठ में पढ़ा। ये सभी शब्द सामासिक शब्द हैं। इन शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले कारकों, शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप किया गया है। वे कारक और शब्द प्रत्यय हैं– 'का' और 'और'। लोप होने पर दो या अधिक शब्दों का संयोग होता है, वह समास कहलाता है।

दो या अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामसिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलाता है।

समास के प्रकार

समास के निम्नलिखित छह प्रकार हैं :

1. द्वंद्व समास
2. द्विगु समास
3. तत्पुरुष समास
4. कर्मधार्‌य समास
5. अव्ययीभाव समास
6. बहुव्रीहि समास

1. **द्वंद्व समास –** जब दोनों पद प्रधान हों, यानी बराबर के हों। दोनों पदों के बीच 'और' अथवा 'या' का लोप होता हो, तब द्वंद्व समास होता है; जैसे– देवता-दानव, ढोल-नगाड़े, आने-जाने। इनमें 'और' शब्द का लोप हुआ है।

2. **द्विगु समास –** इसमें दूसरा पद प्रधान होता है। पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है; जैसे– त्रिवेणी, यानी तीन धाराओं का समूह। चौराहा, यानी चार राहों का समूह। इसमें 'त्रि'-तीन और 'चौ'-चार संख्यावाचक विशेषण हैं।

   नवरात्र = नौ रातों का समूह

   त्रिफला = तीन फलों का समूह

   त्रिलोक = तीन लोकों का समूह

   तिरंगा = तीन रंगों का समूह

3. **तत्पुरुष समास –** इसमें दूसरे पद की प्रधानता होती है। साथ ही कारक चिह्न का लोप होता है; जैसे– राजकुमार यानी राजा का कुमार, ध्यानमग्न यानी ध्यान में मग्न। राजकुमार में 'का' तथा ध्यानमग्न में 'में' का लोप हुआ है। का, में, की, के लिए आदि कारक चिह्न हैं।

4. **कर्मधारय समास –** इसमें पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे– नीलकमल, काली मिर्च, पवनचक्की। इनमें नील, काली और पवन शब्द विशेषण हैं। कमल, मिर्च, चक्की विशेष्य हैं।

5. **अव्ययी भाव समास –** इसमें पहला पद अव्यय होता है। अव्यय का अर्थ है कोई परिवर्तन न होना; जैसे– प्रत्येक (प्रति-एक) इसमें पूर्व पद 'प्रति' में लिंग, वचन के कारण कोई परिवर्तन नहीं होगा। अतः 'प्रत्येक' अव्ययीभाव समास है।

6. **बहुव्रीहि समास –** इसमें दोनों पद गौण होते हैं। दोनों मिलकर किसी अन्य पद के विषय में संकेत देते हैं। अन्य पद इसमें प्रधान होता है; जैसे– नीलकंठ, यानी नीला है कंठ जिसका अर्थात् 'शिव'। दशानन यानी दस हैं आनन जिसके, अर्थात् 'रावण'। ये बहुब्रीहि समास हैं।

14.5 आपने क्या सीखा

- हमारी राष्ट्रीय एकता और संस्कृति-निर्माण में मेलों का महत्त्वूपर्ण स्थान है।
- हमारे देश की नदियाँ मेलों का प्रमुख केंद्र हैं।
- हमें नदियों का महत्त्व पहचानकर उन्हें साफ़-सुथरा रखना चाहिए।
- दो या अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलाता है।
- समाज के छह भेद हैं- द्वंद्व समास, द्विगु समास, तत्पुरुष समास, कर्मधार्य समास, अव्ययीभाव समास और बहुव्रीहि समास।

14.6 योग्यता-विस्तार

भारत के अन्य प्रसिद्ध मेलों की जानकारी एकत्रित करें; जैसे–

- पुष्कर मेला, राजस्थान
- गणेशोत्सव, महाराष्ट्र
- ख्वाजा साहब का उर्स (मेला), राजस्थान
- दुर्गापूजा, पश्चिम बंगाल
- सोनपुर मेला, बिहार
- गोवा का कार्निवल, गोवा
- कच्छ महोत्सव, गुजरात

14.7 पाठांत प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(i) कुंभ का मेला कहाँ-कहाँ पर लगता है?

....

....

(ii) शाही स्नान के जुलूस में क्या दिखाई देता है?

....

....

(iii) हम नदियों के जल को कैसे शुद्ध रख सकते हैं?

....

....

(iv) कुंभ के मेले के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

....

....

....

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) कुंभ का मेला कितने साल बाद लगता है?

(क) बारह साल बाद ☐ (ख) दस साल बाद ☐

(ग) पांच साल बाद ☐ (घ) तीन साल बाद ☐

(ii) अमृत कलश कहाँ से निकला?

(क) शिव की जटा से ☐ (ख) ज़मीन के अंदर से ☐

(ग) त्रिवेणी संगम से ☐ (घ) समुद्र-मंथन से ☐

(iii) उज्जैन में कौन-सी नदी है?

(क) गंगा ☐ (ख) यमुना ☐

(ग) क्षिप्रा ☐ (घ) नर्मदा ☐

(iv) 'देवता-दानव' शब्द किस समास से बना है?

(क) द्वंद्व समास ☐ (ख) कर्मधारय समास ☐

(ग) द्विगु समास ☐ (घ) अव्ययीभाव समास ☐

(v) अव्ययीभाव समास से बना शब्द है–

(क) ढोल-नगाड़े ☐ (ख) थाशक्ति ☐

(ग) चौराहा ☐ (घ) नीतिनिपुण ☐

3. समास कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए :

....

....

....

....

4. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भारत को मेलों और त्योहारों का देश कहा जाता है। यहाँ पर छोटे-छोटे मेले तो गाँव-गाँव व शहर-शहर में लगते हैं। कुंभ का मेला हर 12 साल बाद इलाहाबाद, हरद्वार, नासिक तथा उज्जैन में लगता है। यह दुनिया का सबसे बड़ा मेला है। सोनपुर का जानवरों का मेला बिहार में लगता है। यह एशिया का

पशुओं का सबसे बड़ा मेला है। यहाँ हाथियों को लाइनों में लगाकर बेचा जाता है। पुष्कर मेला ऊँटों का सबसे बड़ा मेला है। यह अक्टूबर-नवम्बर में लगता है। हेमिस गोम्पा मेला लद्दाख में जनवरी-फरवरी में लगता है। गंगा सागर मेला गंगा के किनारे पश्चिमी बंगाल में लगता है। यहीं पर गंगा नदी सागर से मिलती है।

(i) भारत को किसका देश कहा जाता है?

....

(ii) सोनपुर का मेला किसलिए प्रसिद्ध है?

....

....

(iii) पुष्कर मेला क्यों प्रसिद्ध है?

....

....

(iv) गंगा नदी सागर से कहाँ मिलती है?

....

....

14.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

(i) हर 6 वर्ष बाद (ii) चौदह रत्न (iii) बहुत ठंडा

पाठगत प्रश्न-14.1

(i) दुनिया का (ii) राष्ट्रीय (iii) त्रिवेणी

पाठगत प्रश्न-14.2

(i) पवित्र (ii) खतरे (iii) जागरूक

❀ ❀ ❀

मूल्यांकन पत्र-2
(पाठ 8 से 14 तक)

1. पाठों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा कब निकलती है?

....

(ii) अशफ़ाक उल्ला खाँ उत्तर प्रदेश में कहाँ रहते थे?

....

(iii) देवा जेल से भागकर कहाँ पहुँचा?

....

(iv) सोने में सुहागा मिलने से क्या होता है?

....

....

(v) रामप्यारे ने गधे की तीसरी छींक रोकने के लिए क्या किया?

....

(vi) त्रिवेणी संगम में कौन-कौन सी नदियाँ मिलती हैं?

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) कोणार्क का कौन-सा मंदिर बहुत प्रसिद्ध है?

(क) शिव मंदिर ☐ (ख) सूर्य मंदिर ☐

(ग) शनि मंदिर ☐ (घ) विष्णु मंदिर ☐

(ii) अशफ़ाक उल्ला खाँ को किस कांड में फ़ाँसी हुई थी?

(क) अग्नि कांड में ☐ (ख) बम कांड में ☐

(ग) काकोरी कांड में ☐ (घ) फर्जी कांड में ☐

(iii) बूढ़े आदमी ने देवा को क्या खाने को दिया?

(क) पूरी ☐ (ख) रोटी ☐

(ग) मक्खन ☐ (घ) कुछ नहीं ☐

(iv) त्रिवेणी संगम कहाँ है?

(क) इलाहाबाद में ☐ (ख) हरद्वार में ☐

(ग) नासिक में ☐ (घ) उज्जैन में ☐

3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर खाली जगह लिखिए :

(i) जगन्नाथ .... का ही एक नाम है। (भगवान शिव/श्री कृष्ण)

(ii) काकोरी कांड के बाद अशफ़ाक .... हो गए। (भूमिगत/भगत)

(iii) जेलर ने .... को शाबाशी दी। (बूढ़े/देवा)

(iv) रामप्यारे .... राम को प्यारे हो गए। (कुछ-कुछ/सचमुच)

(v) उज्जैन में कुंभ का मेला .... नदी के किनारे लगता है। (क्षिप्रा/गोदावरी)

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए :

जन्म ....

भारी ....

अमृत ....

अमीर ....

ऊपर ....

5. संधि करके लिखिए :

सदा + एव ....

शिव + आलय ....

नर + ईश ....

सूर्य + उदय ....

इति + आदि ....

सु + आगत ....

सम् + तोष ....

6. समास कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए :

....

....

....

....

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मनुष्य के हिस्से में जो बहुत थोड़ा आया है, वह समय है। समय का हम सबसे अधिक नाश करते हैं। और बातों में तो हम सचेत रहते हैं, पर समय को बुरी तरह नष्ट करते हैं। बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो अपना समय आवश्यक और उपयोगी कामों में लगाते हैं। अधिकतर लोग हँसी-दिल्लगी, सैर-सपाटे और बेकार के कामों में नष्ट करते हैं। यदि आप समय का हिसाब लगाएँ कि कितना समय अच्छे कामों में लगाया, कितना बुरे कामों में लगाया, तो आपको दुखी होना पड़ेगा। आपको सोच-समझकर अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए।

(i) मनुष्य के हिस्से में सबसे कम क्या आया है?

....

(ii) अधिकतर लोग अपने समय को किन बातों में लगाते हैं?

....

(iii) हमें अपना समय किन कार्यों में लगाना चाहिए?

....

उत्तरमाला

1. (क) हर साल जुलाई में।
   (ख) शाहजहाँपुर में।
   (ग) एक बूढ़े की झोपड़ी में।
   (घ) सुहागे का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और सोने की दमक बढ़ जाती है।
   (च) गधे के दोनों नथुनों में गोल पत्थर ठोंक दिए।
   (छ) गंगा, यमुना और सरस्वती।

2. (i) (ख) सूर्य मंदिर   (ii) (ग) काकोरी कांड में
   (iii) (घ) कुछ नहीं   (iv) (क) इलाहाबाद में

3. (अ) श्री कृष्ण   (ब) भूमिगत
   (स) बूढ़े   (द) सचमुच
   (य) क्षिप्रा

4.

जन्म	–	मृत्यु	भारी	–	हल्का
अमृत	–	विष	अमीर	–	गरीब
ऊपर	–	नीचे			

5.

सदा + एव	=	सदैव	शिव + आलय	=	शिवालय
नर + ईश	=	नरेश	सूर्य + उदय	=	सूर्योदय
इति + आदि	=	इत्यादि	सु + आगत	=	स्वागत
सम् + तोष	=	संतोष			

6. समास 6 प्रकार के होते हैं–
   1. द्वंद्व समास
   2. द्विगु समास
   3. तत्पुरुष समास
   4. कर्मधारय समास
   5. अव्ययीभाव समास
   6. बहुव्रीहि समास

7. (i) समय।
   (ii) हँसी–दिल्लगी, सैर–सपाटे और बेकार के कामों में।
   (iii) अच्छे कामों में।

❀ ❀ ❀

15

अब्राहम लिंकन का पत्र

पत्र लंबे समय से हमारे जीवन में संचार का एक विश्वसनीय माध्यम रहा है। बीते समय में हम अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सूचनाओं को पत्रों के माध्यम से एक दूसरे तक पहुँचाते थे।

आपने कोई न कोई पत्र ज़रूर लिखा या पढ़ा होगा। पत्र में कई बार हम ऐसी बातें लिखते हैं जो पढ़ने वाले के मन को छू जाती है। अमेरिका के पहले राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने भी एक पत्र अपने पुत्र के शिक्षक के नाम लिखा है। जो बहुत ही वैचारिक, मर्मस्पर्शी, प्रेरक और भावनाओं को झकझोर देने वाला है। आइए, इस पाठ में इस पत्र को पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- बच्चों को किन-किन बातों की शिक्षा देनी चाहिए, इसका उल्लेख कर सकेंगे;
- जीवन में किन-किन चीज़ों से बचना या सावधान रहना है; इस पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अब्राहम लिंकन के जीवन से जुड़ी खास-खास बातों का वर्णन कर सकेंगे;
- लिखते समय विराम चिह्नों का उचित प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

आप अपने मित्र को यह बताते हुए एक पत्र लिखिए कि आप मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से पढ़कर आगे क्या करेंगे?

15.1 मूल पाठ

प्रिय गुरुजी,

सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते और न ही सब सच बोलते हैं– यह तो मेरा लड़का कभी-न-कभी सीख ही लेगा पर उसे यह अवश्य सिखाएँ कि अगर राजनीतिज्ञ स्वार्थी होते हैं, तो जनता के हित में काम करने वाले देशप्रेमी भी होते हैं। उसे यह भी सिखाएँ कि अगर दुश्मन होते हैं, तो दोस्त भी होते हैं। मुझे पता है कि इसमें समय लगेगा परन्तु हो सके तो उसे यह ज़रूर सिखाएँ कि मेहनत से कमाया एक पैसा भी मुफ़्त में मिली नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

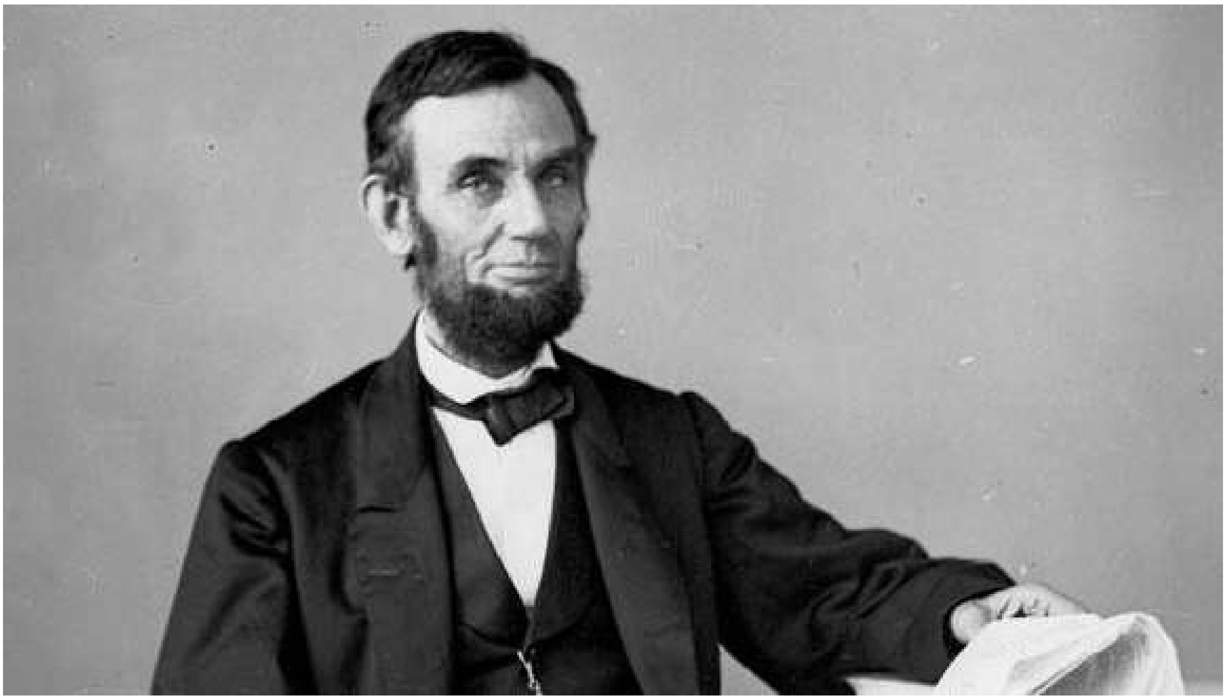

उसे हारना सिखाएँ और जीत में खुश होना भी सिखाएँ। हो सके तो उसे राग-द्वेष से दूर रखें और उसे अपनी मुसीबतों को हँसकर टालना सिखाएँ। वह जल्दी ही यह सबक सीखे कि बदमाशों को आसानी से काबू किया जा सकता है।

अगर संभव हो तो उसे किताबों की मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाएँ। साथ-साथ उसे प्रकृति की सुंदरता – नीले आसमान में उड़ते आज़ाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ की ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें। स्कूल में उसे सिखाएँ कि नकल करके पास होने से तो फ़ेल होना बेहतर है।

चाहे सभी लोग उसे गलत कहें परंतु वह अपने विचारों में पक्का विश्वास रखे और उन पर अडिग रहे। वह भले लोगों के साथ नेक व्यवहार करे और दुष्टों को करारा सबक सिखाए।

जब सब लोग, भेड़ों जैसे एक रास्ते पर चल रहे हों, तो उसमें भीड़ से अलग अपना नया मार्ग प्रशस्त करने की हिम्मत हो। उसे सिखाएँ कि वह हरेक की बात को धैर्यपूर्वक सुने, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसे और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करे। अगर हो सके तो उसे दुख में भी हँसने की सीख दें। उसे समझाएँ कि अगर रोना भी पड़े, तो उसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वह आलोचकों को नज़रंदाज करे और चाटुकारों से सावधान रहे। वह अपने शरीर की ताकत के बलबूते पर भरपूर कमाई करे परंतु अपनी आत्मा और अपने ईमान को कभी न बेचे। उसमें शक्ति हो कि चिल्लाती भीड़ के सामने भी खड़ा होकर, अपने सत्य के लिए जूझता रहे। आप उसे तसल्ली से सिखाएँ परन्तु बहुत लाड़-प्यार में उसे बिगाड़ें नहीं। उसे हमेशा ऐसी सीख दें कि मानव-जाति पर उसकी असीम श्रद्धा बनी रहे।

मैंने अपने पत्र में बहुत कुछ लिखा है। देखें, इसमें से क्या करना संभव है। वैसे मेरा बेटा एक बहुत प्यारा और भला लड़का है।

शब्दार्थ

राग-द्वेष	=	प्रेम और विरोध	चाटुकार	=	चापलूसी करने वाला
मनमोहक	=	मन को मोह लेने वाला	तसल्ली	=	संतुष्टि

15.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अब्राहम लिंकन ने पत्र में जनता के हित में काम करने वालों को बताया है–

   (क) न्यायप्रिय ☐ (ख) देशप्रेमी ☐

   (ग) राजनीतिज्ञ ☐ (घ) स्वार्थी ☐

2. अब्राहम लिंकन ने पत्र में किनसे सावधान रहने की बात कही है–

   (क) आलोचकों से ☐ (ख) भीड़ से ☐

   (ग) चाटुकारों से ☐ (घ) बदमाशों से ☐

15.3 आइए समझें

15.3.1 अंश-1

सभी व्यक्ति .... सबक सिखाए।

यह पत्र अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा था लेकिन यह संसार के हर इन्सान के लिए

एक बहुत ही उपयोगी पत्र साबित हुआ। इस पत्र में लिखी बातों से हम एक बेहतर इन्सान बनने की प्रेरणा पाते हैं। अब्राहम लिंकन के विचारों में हम मानवता के प्रति गहरी चिंता और आस्था देखते हैं। यह बात बिल्कुल ठीक कही गई है कि दुनिया में बदमाश होते हैं तो नेक इन्सान भी। स्वार्थी राजनीतिज्ञ होते हैं तो जनता से प्रेम करने वाले देशप्रेमी भी। दुश्मन होते हैं तो दोस्त भी। अब्राहम लिंकन शिक्षक से अपने पुत्र को यह भी सिखाने के लिए कहते हैं कि मेहनत से कमाया एक पैसा भी मुफ़्त में मिले हज़ारों रुपयों से अधिक कीमती होता है। उन्होंने पत्र में लिखा कि हमें हारना सीखना चाहिए और जीत में खुश होना भी। हार और जीत जीवन में होती रहती हैं, हमें इनकी परवाह न करते हुए बस अपना कार्य ईमानदारी से करते रहना चाहिए और यह भी, कि प्रकृति की खूबसूरती को भी ज़रूर देखना चाहिए। जहाँ नीला आसमान है। आज़ाद पक्षी हैं, गुनगुनाती मधुमक्खियाँ हैं और पहाड़ों की ढलान पर जंगली फूल हैं। ऐसा कहकर वे बच्चों को प्रकृति से जुड़ने व उसके प्रति अपने दायित्वों को निभाने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं। यह भी लिखा कि नकल करके पास होने से अच्छा है, फ़ेल हो जाना। अब्राहम लिंकन ने पत्र में लिखा कि अपने विचारों पर पक्का विश्वास रखना चाहिए और उन पर अडिग रहना चाहिए। नेक लोगों से अच्छा व्यवहार करने के साथ ही दुष्टों को करारा सबक भी सिखाना चाहिए।

पाठगत प्रश्न-15.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पत्र में किस पर अडिग रहने की बात कही गई है–

   (क) अपने विचारों पर ☐ (ख) अपनी मेहनत पर ☐

   (ग) अपनी जीत पर ☐ (घ) अपनी हार पर ☐

2. पाठ में कौन-सा विकल्प नहीं है–

   (क) स्वार्थी-देशप्रेमी ☐ (ख) बदमाश-नेक ☐

   (ग) दुश्मन दोस्त ☐ (घ) चिंता-आस्था ☐

15.3.2 अंश-2

जब एक लोग .... भला लड़का है।

अपने पत्र में आगे अब्राहम लिंकन शिक्षक से निवेदन करते हैं कि मेरे बेटे को सिखाएँ कि वह हर एक की बात धीरज से सुने और उसे सत्य की कसौटी पर कसे। उसमें से अच्छाई को ही ग्रहण करे और भीड़ से अलग अपना रास्ता प्रशस्त करे। मेरा बेटा दुख में भी हँस सके, उसकी ऐसी शिक्षा होनी चाहिए और यह

भी कि यदि रोना भी पड़े तो उसमें शर्म भी महसूस न हो यानी हमें दुख और पीड़ा को स्वभाविक रूप से स्वीकार करना चाहिए। हमें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए, जो हमारी आलोचना करते रहते हैं और ऐसे लोगों से सावधान, जो झूठी तारीफ़ करते रहते हैं। ये स्वार्थी लोग कमें कभी भी क्षति पहुँचा सकते हैं।

उसे यह भी शिक्षा दें कि वह अपने दम पर अपने लिए रोजी-रोटी कमा सके और किसी भी कठिन परिस्थिति में बेईमानी न करे। उसमें वह शक्ति होनी चाहिए कि हज़ारों की भीड़ चाहे कुछ भी कहे, वह जिसे सत्य मानता है, उसके लिए लड़ता रहे। उसमें इतनी समझ होनी चाहिए कि वह मानव जाति के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखे। अंत में अब्राहम लिंकन अपने पुत्र को बहुत प्यारा और भला कहते हुए अपने पत्र का अंत करते हैं। किसी भी छात्र और शिक्षक के लिए लिंकन का यह पत्र एक प्रभावकारी मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है।

पाठगत प्रश्न-15.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पत्र में किस बात में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए :

   (क) अच्छाई ग्रहण करने में ☐ (ख) रोने में ☐

   (ग) हँसने में ☐ (घ) भीड़ से अलग होने में ☐

2. पत्र में हर एक बात को किस कसौटी पर कसने के लिए कहा गया है–

   (क) सीखने की ☐ (ख) धीरज की ☐

   (ग) सत्य की ☐ (घ) अच्छाई की ☐

15.4 भाषा-प्रयोग

मूल पाठ की भाषा खड़ी बोली है। भाषा में हिन्दी के तत्सम, तद्भव शब्दों के साथ ही उर्दू और अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- न्यायप्रिय, स्वार्थी, राग-द्वेष, विश्वास, प्रशस्त, धैर्यपूर्वक, असीम, श्रद्धा आदि **तत्सम शब्द** हैं। नया, रोना, सीख, हँसकर, सुन्दरता, फूल आदि **तद्भव शब्द** हैं। दुश्मन, दोस्त, मुफ़्त, मुसीबत, बदमाश, काबू, हिम्मत, शर्म, नज़रंदाज, ईमान आदि **उर्दू शब्द** हैं। पास, फ़ेल, स्कूल आदि **अंग्रेज़ी शब्द** हैं। इस पाठ में **मुहावरों** का भी प्रयोग हुआ है; जैसे - मार्ग प्रशस्त करना, अडिग रहना, कसौटी पर कसना आदि। यह पाठ पत्र शैली में लिखा गया है। इसमें निवेदन का भाव है। इस पाठ में अनेक विराम चिह्नों का प्रयोग किया गया है। आइए, इन चिह्नों को विस्तार से जानें।

- जहाँ कोई दुर्जन होता है, वहीं कोई सज्जन भी छिपा होता है।

ऊपर लिखे वाक्यों में दो चिह्न (,।) लगे हैं। इनका प्रयोग कुछ देर रुकने के लिए किया जाता है। यह रुकना 'विराम' कहलाता है।

लिखते-पढ़ते समय वाक्य में रुकने के लिए लगाए गए चिह्नों को 'विराम-चिह्न' कहते हैं। कुछ विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं–

1. **पूर्णविराम (।)** वाक्य पूरा होने पर पूर्णविराम (।) लगाया जाता है; जैसे–
   - तितली उड़ रही है।
   - चाय उबल रही है।

2. **अल्प विराम (,)** लिखते या पढ़ते समय हम जहाँ थोड़ी देर के लिए रुकते हैं, वहाँ अल्पविराम (,) होता है, जैसे–
   - मीता, गीता, नीता, रमा और जया पढ़ रही हैं।
   - मैं, तुम और शबनम घूमने जाएँगे।

3. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)** प्रश्न का बोध कराने वाले वाक्य में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
   - रजत क्या कर रहा है?
   - तुमने यह पुस्तक कहाँ से खरीदी है?

4. **विस्मयबोधक चिह्न (!)** खुशी, दुख, अचरज, दया और घृणा आदि का भाव प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–
   - अरे! तुम आ गए।
   - वाह! कितनी सुन्दर बेटी है।

5. **योजक चिह्न (-)** इस चिह्न का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने के लिए किया जाता है; जैसे–
   - वह दूध-दही का शौकीन है।
   - गाड़ी धीरे-धीरे चल रही है।
   - विराम-चिह्नों के प्रयोग से भाषा को समझने में आसानी होती है।

15.5 आपने क्या सीखा

- बच्चों में न्यायप्रियता, जनसेवा एवं देश के प्रति प्रेम की भावना होनी चाहिए।

- पराजय को स्वीकारने की आदत होनी चाहिए और विषम परिस्थितियों में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ संघर्ष की भावना होनी चाहिए।
- सत्यप्रियता, तर्कशीलता व निर्णय क्षमता का विकास करना चाहिए।
- प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए।
- लिखते-पढ़ते समय वाक्य में रुकने के लिए लगाए गए चिह्न 'विराम-चिह्न' कहलाते हैं।

15.6 योग्यता-विस्तार

यह पाठ अब्राहम लिंकन द्वारा लिखा गया एक पत्र है, जिसे लिंकन ने अपने पुत्र के शिक्षक के नाम लिखा था। यह पत्र मूलतः अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया था।

अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फ़रवरी, 1809 ई. को हॉडगेन विले, कैन्टकी में एक गरीब परिवार में हुआ था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने कठिन संघर्ष किया और सफल हुए। अपनी योग्यता, प्रतिभा और लगन के बल पर उन्होंने अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति का पद प्राप्त किया। 4 मार्च, 1861 ई. से 15 अप्रैल, 1865 ई. तक वे राष्ट्रपति के पद पर कार्यरत रहे। अब्राहम लिंकन पेशे से वकील और राजनीतिज्ञ थे। 15 अप्रैल, 1865 ई. को छप्पन वर्ष की आयु में लिंकन का निधन हो गया। अपने राष्ट्र, समाज और परिवार के प्रति गहरा, सम्मान, आत्मीयता और प्रेम रखने वाले अब्राहम लिंकन एक युग पुरुष की तरह याद किए जाते हैं।

आपने कुछ विराम-चिह्नों के बारे में इस पाठ में पढ़ा। अन्य विराम-चिह्न हैं- –, ( ), ' ', " " और ; किसी व्याकरण की पुस्तक को पढ़कर इनके विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

पास के पुस्तकालय में जाएँ और 'पिता के पत्र, पुत्री के नाम' पढ़ें ये पत्र पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को लिखे थे। अपने साथियों को भी प्रेरित करें कि वे उन पत्रों को पढ़ें।

15.7 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प पर (✓) का निशान लगाइए :

(i) 'पत्र' में मुफ़्त में मिले हज़ारों रुपये से कीमती माना गया है :

(क) मेहनत से कमाए एक पैसे को ☐

(ख) प्रकृति की खूबसूरती को ☐

(ग) सत्य की कसौटी को ☐

(घ) विचारों पर विश्वास को ☐

(ii) 'पत्र' में किसके प्रति आदर और सम्मान का भाव रखने की ओर संकेत है :

(क) शिक्षक के प्रति ☐ (ख) किताबों के प्रति ☐

(ग) प्रकृति के प्रति ☐ (घ) मानव जाति के प्रति ☐

2. 'अब्राहम लिंकन का पत्र' पाठ के आधार पर बताइए कि प्रकृति का सौंदर्य कहाँ-कहाँ दिखाई देता है?

3. 'अब्राहम लिंकन का पत्र' पाठ में शिक्षक से पुत्र को क्या सिखाने का निवेदन किया गया है? किन्हीं तीन बातों का उल्लेख कीजिए।

4. भाषा में प्रयोग किए जाने वाले किन्हीं दो विराम-चिह्नों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

5. उपयुक्त विराम-चिह्न लगाकर फिर लिखिए :

महान चीनी विचारक मेन्सियस की माँ अपने बेटे को महान व्यक्ति बनाना चाहती थी वह एक गंदी बस्ती में रहती थी वहाँ लोग जुआ खेलते शराब पीते गंदी-गंदी गालियाँ देते बालक जब बड़ा हुआ तो उनका असर उस पर पड़ने लगा वह भी गंदी-गंदी गालियाँ सीखने लगा घर आकर वैसा ही व्यवहार करने लगा मेन्सियस की माँ को चिंता हुई उसने वहाँ से दूसरी जगह जाना तय कर लिया अब वह चहल-पहल भरे एक बाज़ार में रहने लगी

15.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ख) देशप्रेमी
2. (ग) चाटुकारों से

पाठगत प्रश्न-15.1

1. (क) अपने विचारों पर
2. (घ) चिंता-आस्था

पाठगत प्रश्न-15.2

1. (ख) रोने में
2. (ग) सत्य की

❀ ❀ ❀

16

काँटों में राह बनाते हैं

समाज में थोड़ा-सा कष्ट आने पर लोग दहल जाते हैं तथा अपने रास्ते से भटक जाते हैं। ऐसे लोगों की निंदा होती है। कर्मवीर, साहसी और हिम्मतवाले कभी भी मुसीबतों से नहीं घबराते। जो उत्साह के साथ अपने पथ पर आगे बढ़ते हैं, उन्हें ही सफलता मिलती है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने इस कविता के माध्यम से निराश पांडवों को प्रेरणा देने के लिए श्रीकृष्ण के मुख से प्रेरणादायक वचन बड़े सुंदर शब्दों में कहलवाए हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- विपत्ति आने पर क्या करना चाहिए, इसका उल्लेख कर सकेंगे;
- बहादुर व्यक्ति के गुणों का वर्णन कर सकेंगे;
- मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ एवं अंतर स्पष्ट कर वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

बताइए आप क्या करेंगे :

(i) घर में आग लग जाए तो

....

(ii) सड़क पर कोई घायल हो जाए तो

....

(iii) आधी रात को अचानक कोई मेहमान आ जाए तो

....

(iv) रास्ते में चलते हुए चक्कर आने लगे तो

....

16.1 मूल पाठ

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेहँदी में जैसे लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

– रामधारी सिंह 'दिनकर

शब्दार्थ

विपत्ति	=	मुसीबत, कष्ट	खम ठोंकना	=	ताल ठोंकना
सूरमा	=	बहादुर, शूरवीर	पाँव उखड़ना	=	घबराना, भाग जाना
विचलित	=	मार्ग से हटना	पत्थर पानी बनना	=	मुश्किल आसान होना
विघ्नों	=	बाधाओं	प्रखर	=	तेज, तीव्र
गले लगाना	=	स्वीकारना	वर्तिका	=	दीपक की बत्ती
मग	=	मार्ग, रास्ता			

16.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए वाक्यों के उत्तर दीजिए :

1. जो बहादुर होते हैं, वे विपत्ति आने पर क्या नहीं खोते हैं–

   (क) शक्ति ☐ (ख) धैर्य ☐

   (ग) विश्वास ☐ (घ) धन ☐

2. जब मनुष्य ज़ोर लगाता है, तो पत्थर क्या बन जाता है–

   (क) मिट्‌टी ☐ (ख) दूध ☐

   (ग) पानी ☐ (घ) मोम ☐

3. मेहँदी के अंदर क्या चीज़ होती है–

   (क) रोशनी ☐ (ख) ठंडक ☐

   (ग) गर्मी ☐ (घ) लाली ☐

16.3 आइए, समझें

16.3.1 अंश–1

सच है विपत्ति .... पानी बन जाता है।।

अक्सर विपत्ति के समय कुछ लोग घबरा जाते हैं। हिम्मत जवाब दे जाती है। मुकाबला करने की ताकत नहीं रह जाती। कवि ने बताया है कि ऐसे लोग कायर होते हैं। बहादुर लोग विपत्ति के समय घबराते नहीं हैं। वे धीरज से काम लेते हैं। हिम्मत के साथ विघ्न-बाधाओं और मुसीबतों का मुकाबला करते हैं। संघर्ष करते रहने पर आगे बढ़ने की राह अपने-आप बन जाती है। धीरज खो देने और निराश हो जाने से मुसीबत से निकलने के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं।

संसार में ऐसी कोई विघ्न-बाधा नहीं है, जो साहसी व्यक्ति का रास्ता रोक सके। जब साहसी व्यक्ति ताल ठोंक कर ललकारता है तो पर्वत के समान बड़ी से बड़ी बाधा भी भाग खड़ी होती है। मनुष्य अपनी लगन, मेहनत और हिम्मत से पत्थर के अंदर से भी पानी निकाल लेता है। उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। कवि यहाँ कहना चाहता है कि हौसला रखनेवाले के लिए विपरीत परिस्थितियों में भी संभावना समाप्त नहीं होती।

पाठगत प्रश्न-16.1

1. दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(i) अक्सर .... के समय कुछ लोग घबरा जाते हैं। (संघर्ष / विपत्ति / परीक्षा)

(ii) बहादुर लोग विपत्ति के समय .... से काम लेते हैं। (झगड़े / ताकत / धीरज)

(iii) कोई बाधा .... व्यक्ति का रास्ता नहीं रोक पाती।(साहसी / धार्मिक / बलवान)

16.3.2 अंश-2

गुण बड़े .... नहीं वह पाता है।

हर मनुष्य में एक से बढ़कर एक गुण भरे हुए हैं। अनेक शक्तियाँ भरी हुई हैं। मेहँदी के भीतर जैसे लाली छुपी है, दीपक की बाती के भीतर जैसे उजाला भरा है, उसी प्रकार मनुष्य के भीतर गुण और शक्तियाँ भरी हैं। लेकिन शर्त यह है कि वह अपने गुणों को पहचाने और शक्तियों को जाने। यदि अपने गुणों और शक्तियों को मनुष्य नहीं जानेगा तो वह कुछ नहीं कर सकता। यह उदाहरण एकदम सच है कि जो बत्ती नहीं जलाएगा, उसे रोशनी नहीं मिल पाएगी। रोशनी नहीं मिलेगी तो अँधेरा कैसे दूर होगा। किसी काम में सफलता पाने के लिए पूरे मन से प्रयास करना जरूरी है। जो कार्यरत है वही सफल भी होता है।

पाठगत प्रश्न-16.2

1. दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(i) मनुष्य के भीतर तमाम गुण और .... भरी हैं। (बीमारियाँ / शक्तियाँ / कमियाँ)

(ii) जो .... नहीं जलाएगा, उसे रोशनी नहीं मिल पाएगी। (बत्ती / घर / चूल्हा)

(iii) सफलता पाने के लिए पूरे मन से .... करना ज़रूरी है। (अध्ययन / भजन/ प्रयास)

16.4 भाषा-प्रयोग

पाठ में दी गई कविता खड़ी बोली में है। यह तुकांत कविता है। इसमें आती-दहलाती, होते-खोते, लगाते-बनाते, लाली-उजियाली जैसे तुकांत शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं मुहावरों का भी प्रयोग किया गया है। आइए, मुहावरों के बारे में जानें।

अक्सर हम अपनी बातचीत में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करते हैं; जैसे– आँख दिखाना, मक्खी मारना, अँगूठा दिखाना, आग बबूला होना आदि। इस पाठ में भी कुछ ऐसे ही मुहावरे आए हैं; जैसे– काँटों में राह बनाना, पाँव उखड़ना, खम ठोंकना आदि। मुहावरे भाषा के सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

कुछ और मुहावरे, उनके अर्थ और प्रयोग देखिए :

	मुहावरे	**अर्थ**	**वाक्य में प्रयोग**
1.	अंग-अंग ढीला होना	बहुत थक जाना	दिन भर भाग-दौड़ करने से अंग-अंग ढीला हो रहा है।
2.	अगर-मगर करना	टालमटोल करना	मेरा काम कब करोगे? हमेशा अगर-मगर करते रहते हो।
3.	अपना उल्लू सीधा करना	स्वार्थ पूरा करना	वह मीठी-मीठी बातें करके अपना उल्लू सीधा करता है।
4.	उल्लू बनाना	मूर्ख बनाना	एक ठग ने मुझे उल्लू बनाकर बीस हज़ार रुपए ऐंठ लिए।
5.	करवटें बदलना	नींद न आना	चिंता के कारण वह पूरी रात करवटें बदलता रहा।
6.	खेल बिगाड़ना	काम खराब कर देना	तुमने अपनी नासमझी के कारण सारा खेल बिगाड़ दिया।

मुहावरों की ही तरह हम अपनी बातों में कहावतों या लोकोक्तियों का भी प्रयोग करते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों से हमारी भाषा प्रभावशाली और सुंदर बनती है। मुहावरे अधूरे वाक्य के रूप में होते हैं, जबकि लोकोक्तियों या कहावतों में पूरे वाक्य होते हैं। मुहावरे के शब्दों का सामान्य अर्थ नहीं लिया जाता बल्कि उसी से मिलता-जुलता अर्थ (लाक्षणिक) लिया जाता है। मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करते समय इसके रूप को बदला नहीं जा सकता। लोक में प्रचलित उक्ति या कहावत कथन की पुष्टि आदि के लिए प्रयोग की जाती हैं। कुछ उदाहरण लोकोक्तियों के भी देखिए –

	लोकोक्तियाँ	**अर्थ**
1.	आम के आम गुठलियों के दाम	दोहरा लाभ होना
2.	उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	दोषी द्वारा दूसरे पर दोष मढ़ना
3.	नाच न जाने आँगन टेढ़ा	काम का ज्ञान न होना और दूसरों को दोष देना
4.	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	अधिक मेहनत करके थोड़ा-सा फल मिलना
5.	डूबते को तिनके का सहारा	विपत्ति के समय छोटा-सा सहारा भी बहुत राहत देता है

6.	आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास	महत्वपूर्ण काम छोड़कर फ़िज़ूल का काम करने लगना
7.	जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय	जिसकी रक्षा ईश्वर करता है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता

16.5 आपने क्या सीखा

- मुसीबत में घबराने वाले कायर होते हैं। बहादुर व्यक्ति धीरज के साथ मुकाबला करते हैं।
- साहसी व्यक्ति हर काम में सफल होता है।
- मनुष्य के अंदर एक से बढ़कर एक गुण छिपे हैं। उन्हें पहचानने की ज़रूरत है।
- जो पूरे मन से प्रयास करता है, सफलता उसी को मिलती है।
- मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में सौंदर्य आता है।

16.6 योग्यता-विस्तार

- इस पाठ में पढ़ी गई कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' की लिखी हुई है। उन्हें 'राष्ट्रकवि' का दर्जा दिया गया। उनका जन्म बिहार प्रदेश, जिला बेगूसराय के ग्राम सिमरिया में 23 सितम्बर, 1908 को हुआ था। वे ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुए। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में प्रभावकारी लेखन किया। 24 अप्रैल, सन् 1974 को उन्होंने इस संसार से विदा ली।
- पाठ में दी गई कविता याद करके लय के साथ अपने साथियों को सुनाएँ।
- धीरज, साहस, बहादुरी पर कोई और कविता दूसरी पुस्तकों में खोजकर याद करें और सुनाएँ।
- ऐसी ही कोई कविता आप भी लिखने का प्रयास करें।

16.7 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) विपत्ति आने पर कौन दहल जाते हैं?

....

(ii) सूरमा विघ्नों को गले लगाकर क्या करते हैं?

....

(iii) आदमी जब खम ठोकता है, तब क्या हो जाता है?

....

(iv) मनुष्यों में गुण किस तरह छिपे रहते हैं?

....

(v) रोशनी किसे प्राप्त नहीं होती?

....

2. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए :

	मुहावरे / लोकोक्तियाँ	अर्थ
(i)	उल्टी गंगा बहाना	....
(ii)	उँगली उठाना	....
(iii)	आड़े हाथों लेना	....
(iv)	घी के दिये जलाना	....
(v)	जैसी करनी, वैसी भरनी	....
(vi)	एक और एक ग्यारह	....

3. निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करके लिखिए :

(i) कलई खुलना ....

(ii) चिकना घड़ा होना ....

(iii) तीन-पाँच करना ....

4. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

रोशनी को साथ लाएँगी किताबें।
अब अँधेरे को हटाएँगी किताबें।।
जो लुटी मेहनत ज़मीं पर कौड़ियों में,
आदमी को हक दिलाएँगी किताबें।।

ये नहीं कोरी कहानी या हैं किस्से,
ज़िन्दगी जीना सिखाएँगी किताबें।
खून आखिर खून है, पानी नहीं है।
आग पानी में लगाएँगी किताबें।।

(i) किताबें किसको साथ में लाएँगी?

....

(ii) किताबें क्या दिलाएँगी?

....

(iii) किताबें कोरी कहानी किस्से नहीं हैं, ये लोगों को क्या सिखाएँगी?

....

16.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ख) धीरज
2. (ख) पानी
3. (घ) लाली

पाठगत प्रश्न-16.1

1. (i) विपत्ति
   (ii) धीरज
   (iii) साहसी

पाठगत प्रश्न-16.2

1. (i) शक्तियाँ
   (ii) बत्ती
   (iii) प्रयास

17

प्रायश्चित

विज्ञान के इस युग में भी कई लोग अंधविश्वासों में जकड़े रहते हैं। इस चक्कर में अपना पैसा भी गँवाते हैं और सुख-चैन भी। पाखंडी लोग भी ऐसे अंधविश्वास करने वालों को खूब ठगते हैं। इससे बचने के लिए ज़रूरत होती है– उचित सोच-विचार की। आइए, एक कहानी पढ़ें, जिसमें एक अंधविश्वास पर चोट की गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- अंधविश्वासों से होने वाले नुकसान का उल्लेख सकेंगे;
- समाज में प्रचलित अंधविश्वासों पर अपने तर्क प्रस्तुत कर सकेंगे;
- वाक्यांश के लिए प्रयुक्त शब्द को पहचानकर उसका प्रयोग कर सकेंगे।

17.1 मूल पाठ

अगर कबरी बिल्ली घर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से, और अगर रामू की बहू घरभर में किसी से नफ़रत करती थी, तो कबरी बिल्ली से। रामू की बहू पति की प्यारी और सास की दुलारी, कम उमर की। सासू माँ ने हाथ में माला पकड़ी और भंडारघर की चाबी रामू की बहू की करधनी में लटकने लगी।

कभी रामू की बहू हाँडी में घी रखते-रखते ऊँघ गई, तो घी गया कबरी के पेट में। अगर रामू की बहू रसोई में दूध ढँककर किसी और काम में लग गई, तो दूध नदारद। घर में रखी रबड़ी से भरी कटोरी हो या मलाई,

जब तक रामू की बहू घर का कुछ दूसरा काम निपटाए, कबरी रबड़ी-मलाई सब चट कर जाती।

कबरी के हौसले दिन पर दिन बढ़ते ही जाते। एक दिन तो हद ही हो गई। रामू की बहू ने रामू के लिए पिस्ता-बादाम, मखाने डालकर खीर बनाई। उसे फूल के कटोरे में भरकर ऊपर ताक पर रख दिया। उसके बाद रामू की बहू पान लगाकर सास को देने के लिए दूसरे कमरे में गई। तभी कबरी ने ऊपर कटोरे पर छलाँग लगा दी। उसका पंजा कटोरे पर लगा और कटोरा छन्न से नीचे आ गिरा। रामू की बहू के कान में कटोरा गिरने की आवाज़ आई। वह सास के सामने पान फेंककर कमरे की तरफ़ दौड़ी। वहाँ पहुँचकर वह क्या देखती है कि फूल का कटोरा टुकड़े-टुकड़े, खीर फ़र्श पर, और बिल्ली मज़े में खीर खा रही है।

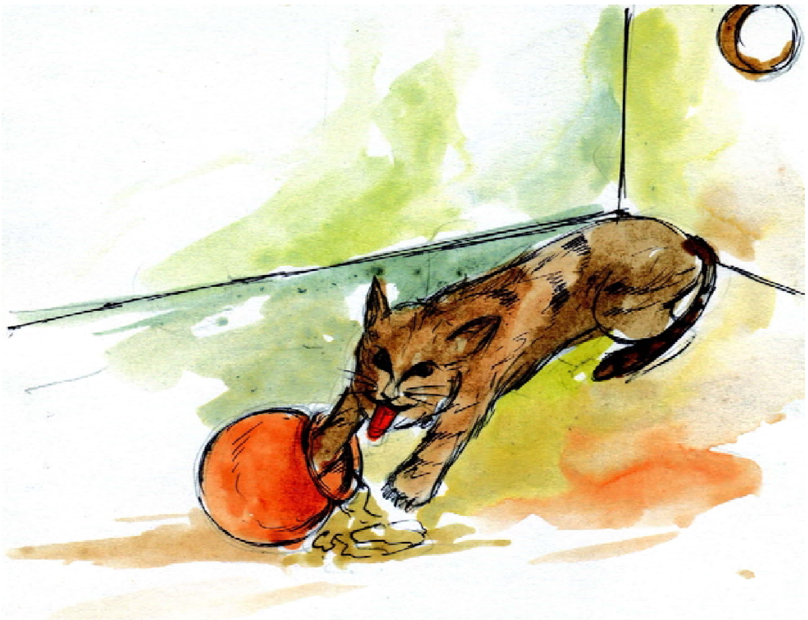

यह देखते ही रामू की बहू का गुस्सा सातवें आसमान पर। उसने तय कर लिया कि घर में या तो वह रहेगी या कबरी बिल्ली। उसने एक तरकीब सोची और दूध से भरा कटोरा दरवाज़े की देहरी पर रख दिया। दूध को देखकर कबरी जैसे ही उसे पीने को लपकी, वैसे ही रामू की बहू ने लकड़ी का पाटा खींचकर ज़ोर से उस पर दे मारा। कबरी हिली न डुली, बस, वहीं पर ढेर हो गई। आवाज़ सुन महरी झाड़ू छोड़ भागी आई और बोली- "अरे रे! माँजी, बिल्ली मर गई।"

मिसरानी बोली– "बहू से बिल्ली की हत्या हुई है। यह तो बहुत बुरा हुआ। बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है। हम तो रसोई न बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।" सासू माँ उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहने लगीं कि जब तक बहू के सिर से हत्या का पाप न उतर जाए, कोई पानी भी नहीं पी सकता।

महरी बोली– "कहो तो मैं पंडित जी को बुला लाऊँ?"

सास बोली– "हाँ, जल्दी बुला लाओ।"

रामू की बहू के हाथों बिल्ली की हत्या की खबर पड़ोस में बिजली की तरह फैल गई। फिर क्या था, वहाँ पर औरतों का ताँता लग गया। जितने मुँह, उतनी बातें।

महरी भागकर पंडित परमसुख को बुला लाई। उनकी कद–काठी छोटी, लेकिन तोंद का घेरा बहुत बड़ा था। उनके आते ही मानो घर में पंचायत बैठ गई– सासू माँ, मिसरानी, किसनू की माँ, छन्नू की दादी और पंडित परमसुख।

किसनू की माँ ने पूछा– "पंडित जी, बिल्ली की हत्या करने पर कौन–सा पाप लगता है?"